संपूर्ण भारत के लिए एक प्रकाशन

दैनिक घटती घटना

RNI Reg.No.-CHHHIN/2004/15050
Postal Reg.No.-13/Surguja DN/2023-2025

Www.ghatatighatana.com

Ghatatighatana11@gmail.com

अम्बिकापुर,वर्ष 21, अंक -03 सोमवार ,04 नवम्बर 2024 , पृष्ठ - 8 मूल्य 2 रूपये

देश की संक्षिप्त खबरें

अगले सप्ताह रिटायर होंगे चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़

» अयोध्या पर फैसला सुनाने वाली पीठ के आखिरी न्यायाधीश

नई दिल्ली, 03 नवंबर 2024(ए)। अयोध्या राम जन्मभूमि मामले में फैसला सुनाने वाली सुप्रीम कोर्ट की पांच सदस्यीय पीठ के आखिरी न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ अगले सप्ताह सुप्रीम कोर्ट को अलविदा कहेंगे। भारत के प्रधान न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ 10 नवंबर को सेवानिवृत होंगे और यह संयोग ही है कि नौ नवंबर को अयोध्या पर आए फैसले को पांच वर्ष पूरे होंगे।

टिकट रिजर्वेशन में एआई की मदद लेगा भारतीय रेलवे

नई दिल्ली, 03 नवंबर 2024(ए)।भारतीय रेलवे अब टिकट रिजर्वेशन को बेहतर बनाने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) तकनीक का उपयोग करेगा। एआई के उपयोग से सीट आवंटन की प्रक्रिया काफी सरल और प्रभावी हो जाएगी। एआई सिस्टम यात्रियों के डेटा और उपलब्ध सीटों को ध्यान में रखते हुए सीटों का आवंटन करेगा, जिससे प्रक्रिया में पारदर्शिता और सुविधा बढ़ेगी।ट्रेन का सीट चार्ट प्रस्थान से चार घंटे पहले तैयार किया जाता है। एआई प्रणाली, विशेष रूप से वरिष्ठ नागरिकों, गर्भवती महिलाओं और अन्य ज़रूरतमंद यात्रियों के लिए फायदेमंद होगी क्योंकि यह उन्हें प्राथमिकता देगा और उनकी यात्रा को सुविधाजनक बनाएगा।

दिल्ली के वकील 4 नवंबर को काम से रहेंगे दूर

नई दिल्ली ,03 नवंबर 2024(ए)। दिल्ली के सभी बार एसोसिएशनों की समन्वय समिति की रविवार को एक महत्वपूर्ण बैठक हुई, जिसमें सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि वकील 4 नवंबर, 2024 को काम से विरत रहेंगे। यह निर्णय गाजियाबाद में एक निर्दोष वकील पर क्रूर हमले की कड़ी निंदा में आया है , जिसे कथित तौर पर जिला न्यायाधीश द्वारा निर्देशित किया गया था। दिल्ली के सभी बार एसोसिएशनों की समन्वय समिति के अधिवक्ता जगदीप वत्स ने एएनआई से बात करते हुए पुलिस की कार्रवाई की निंदा की।

तीन दिवसीय छत्तीसगढ़ राज्योत्सव का शुभारंभ आज

» नया रायपुर में 04-06 नवम्बर तक राज्योत्सव का होगा भव्य आयोजन...

» मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव होंगे उद्घाटन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि...

» 6 नवम्बर को उप राष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ राज्य अलंकरण एवं समापन समारोह में शामिल होंगे...

» ख्याति प्राप्त कलाकार देंगे सांस्कृतिक प्रस्तुति...

» शासकीय विभागों द्वारा लगाई जाएगी विकास प्रदर्शनी...

» शिल्प ग्राम, फूड कोर्ट और मीना बाजार रहेगा आकर्षण का केन्द्र...

रायपुर, 03 नवंबर 2024(ए)। छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस राज्योत्सव 2024 के आयोजन को लेकर तैयारियां जोर-शोर से जारी है। तीन दिवसीय राज्योत्सव का भव्य आयोजन 4 नवम्बर से 6 नवम्बर तक राज्योत्सव स्थल, नया रायपुर अटल नगर में होगा। राज्योत्सव स्थल में मुख्य मंच से लेकर पूरे परिसर की साज-सज्जा का काम तेजी से कराया जा रहा है। शासकीय योजनाओं एवं उपलब्धियों के प्रचार-प्रसार के लिए सभी विभागों के अधिकारी अपने-अपने विभाग का प्रदर्शनी स्टॉल लगाए जाने की तैयारी में जुटे हैं।

ख्याति प्राप्त कलाकारों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति

राज्योत्सव के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा, जिसमें देश के ख्याति प्राप्त कलाकार अपनी प्रस्तुति देंगे। 4 नवम्बर को संध्या 4:30 बजे से सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शुरुआत होगी, जिसमें बालीवुड गायक शांतुन मुखर्जी (शानु) रात्रि 7:45 बजे अपनी प्रस्तुति देंगे। इसके अतिरिक्त, छत्तीसगढ़ के विभिन्न लोक नृत्यों, आदिवासी संस्कृति और धार्मिक प्रस्तुतियों का भी प्रदर्शन किया जाएगा।

5 नवम्बर को पुरानिक साहू,सुरेन्द्र साहू,भोला यादव और मोहन नायडू द्वारा लोक धुनों और क्षेत्रीय संगीत की प्रस्तुतियां दी जाएंगी। वहीं 6 नवम्बर को अनुराग शर्मा, मनोज प्रसाद, सवि श्रीवास्तव, और प्रसिद्ध गायक पवनदीप एवं अरूनिता अपनी प्रस्तुतियों से कार्यक्रम का समापन करेंगे।

उद्घाटन समारोह में शामिल होंगे प्रमुख गणमान्य

राज्य स्थापना दिवस राज्योत्सव 2024 का उद्घाटन 4 नवम्बर को संध्या 6 बजे मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव करेंगे। उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय करेंगे। छत्तीसगढ़ विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह कार्यक्रम में अति विशिष्ट अतिथि होंगे। राज्यपाल श्री रमेन डेका के मुख्य आतिथ्य में 5 नवम्बर को राज्योत्सव के कार्यक्रम का शुभारंभ होगा। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे। राज्य अलंकरण समारोह एवं राज्योत्सव का समापन 6 नवम्बर को उप राष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ के मुख्य आतिथ्य में होगा। इस अवसर पर राज्यपाल श्री रमेन डेका कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय एवं विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह कार्यक्रम में अति विशिष्ट अतिथि होंगे।

शासकीय विभागों की भव्य प्रदर्शनी

राज्योत्सव के अवसर पर छत्तीसगढ़ शासन के सभी विभागों द्वारा विभिन्न हैंगर में प्रदर्शनी स्टॉल लगाए जाएंगे। हैंगर-एक और हैंगर-दो में शासकीय विभागों के स्टॉल होंगे, जबकि हैंगर-तीन में निजी संस्थान और हैंगर-चार में पब्लिक सेक्टर के संस्थान अपनी प्रदर्शनी लगाएंगे। इसके अतिरिक्त, शिल्प ग्राम में छत्तीसगढ़ के पारंपरिक शिल्पों का प्रदर्शन किया जाएगा, जहां स्थानीय हस्तशिल्प उत्पादों की बिक्री भी होगी। राज्योत्सव में विभिन्न सांस्कृतिक और सामाजिक गतिविधियों के साथ-साथ मनोरंजन के लिए फूड कोर्ट और मीना बाजार भी आकर्षण का मुख्य केंद्र होंगे।

झारखंड चुनाव में भाजपा ने किया बड़ा वादा

» महिलाओं को हर माह 2100 रुपये, फ्री गैस सिलेंडर,

» 300 यूनिट फ्री बिजली, और अग्निवीरों को सरकारी नौकरी की गारंटी

रांची, 03 नवंबर 2024(ए)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने झारखंड में बीजेपी का घोषणा पत्र जारी किया। झारखंड चुनाव के लिए बीजेपी के 'संकल्प पत्र' में पार्टी ने राज्य के गठन के 25 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में 25 संकल्पों की रूपरेखा तैयार की है। इनमें 'गोगो दीदी' योजना के तहत महिलाओं को हर महीने 2,100 रुपये देने का वादा भी शामिल है। गृह मंत्री अमित शाह ने झारखंड बीजेपी का घोषणा पत्र जारी करने के बाद हेमंत सोरेन पर तीखा वार किया। उन्होंने कहा कि जेएमएम के शासन में महिलाएं और आदिवासी सुरक्षित नहीं हैं।

क्या है बीजेपी के संकल्प पत्र में?

- झारखंड के सभी परिवारों को 500 रुपये में एलपीजी गैस सिलेंडर और साल में दो मुफ्त सिलेंडर प्रदान करेंगे।

5 लाख को नौकरी,भरे जाएंगे तीन लाख सरकारी पद

- 5 वर्षों के भीतर झारखंड के युवाओं के लिए 5 लाख स्वरोजगार के अवसर सृजन करेंगे. इसके अलावा 2,87,500 सरकारी पदों पर निष्पक्ष और पारदर्शी तरीके से भर्ती सुनिश्चित करेंगे. इसके लिए पहली कैबिनेट बैठक में भर्ती की प्रक्रिया शुरु करेंगे और नवंबर 2025 तक 1.5 लाख पदों पर भर्ती की प्रक्रिया पूरी करेंगे. सभी परीक्षाओं के लिए वार्षिक कैलेंडर भी जारी करेंगे.

पढ़ने वाले छात्रों को दो हजार रुपए महीना

- हर साल 1 लाख झारखंडी युवाओं के लिए स्वरोजगार के अवसर प्रदान अवधि के लिए प्रति माह ₹2,000 'युवा साथी' भत्ता प्रदान करेंगे.
- झामुमो सरकार में व्याप्त कुशासन को खत्म करेंगे और सभी के लिए आवास सुनिश्चित करेंगे. झारखंड के प्रत्येक नागरिक को घर बनाने के लिए निःशुल्क बालू उपलब्ध कराएंगे. 21 लाख घरों के लिए पीएम आवास योजना का पूर्ण कार्यान्वयन सुनिश्चित करेंगे, जिसमें प्रति घर 1 लाख की बढ़ी हुई वित्तीय सहायता भी शामिल होगी. 2027 तक जल जीवन मिशन के पूर्ण कार्यान्वयन के माध्यम से शेष 59 लाख घरों में नल जल कनेक्शन प्रदान करेंगे.

झारखंड में जरूर लागू होगा यूसीसी

विधानसभा चुनाव से पहले अमित शाह का बड़ा ऐलान

झारखंड विधानसभा चुनाव के लिए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बीजेपी का घोषणा पत्र जारी कर दिया है। इस दौरान उन्होंने कहा कि बीजेपी झारखंड में कुशासन-भ्रष्टाचार का अंत करेगी और माटी, बेटी और रोटी की सुरक्षा करेगी। रैली को संबोधित करते हुए गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि झारखंड में यूसीसी जरूर लागू होगा।यूसीसी का जिक्र करते हुए गृह मंत्री ने कहा, आदिवासी का कोई अधिकार नहीं छीना जायेगा। उत्तराखंड में एक मॉडल भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने देश के सामने रखा है, उसमें हमने आदिवासियों को उनके रिति-रिवाजों को, संस्कारों को और उनके कानूनों को पूरी तरह यूसीसी से बाहर रखा है। बीजेपी देश भर में जहां यूसीसी लाएगी, वहां आदिवासी को बाहर रखकर उसको लागू करेगी।

हेमंत सोरेन सरकार पर घुसपैठियों को पनाह देने का आरोप

रांची में रैली को संबोधित करते हुए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन पर जमकर हमला करते हुए कहा, झारखंड का ये चुनाव न केवल सरकार बदलने का चुनाव है, बल्कि झारखंड का भविष्य सुरक्षित करने का चुनाव है। झारखंड की महान जनता को तय करना है कि भ्रष्टाचार में डूबी हुई सरकार चाहिए या विकास के रास्ते पर चलती हुई पीएम मोदी के नेतृत्व वाली बीजेपी सरकार चाहिए। घुसपैठ कराकर झारखंड की अस्मिता को खतरे में डालने वाली सरकार चाहिए या परिंदा भी पर न मार सके ऐसी सरहद की सुरक्षा करने वाली बीजेपी सरकार चाहिए। गृह मंत्री अमित शाह ने सीएम हेमंत सोरेन पर घुसपैठियों को पनाह देने का आरोप लगाते हुए कहा, हेमंत सोरेन को घुसपैठियों में अपना वोट बैंक दिखाई देता है।

65 हजार लोगों का आधार कार्ड होगा रद्द

नई दिल्ली,03 नवंबर 2024(ए)। आधार कार्ड धारकों के लिए बड़ी खबर है। केंद्र सरकार ने एक सख्त कदम उठाते हुए लगभग 65,000 लोगों का आधार कार्ड रद्द करने का फैसला किया है, जिनके आधार कार्ड 10 साल या उससे पुराने हैं और जिन्हें अभी तक अपडेट नहीं किया गया है। भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण ने जानकारी अपडेट के लिए मुफ्त ऑनलाइन सेवा उपलब्ध कराई है, इसके लिए 14 दिसंबर की अंतिम डेडलाइन दी गई है।

क्यों जरूरी है आधार कार्ड का अपडेट?

आधार कार्ड अब लगभग हर जगह पहचान के रूप में आवश्यक हो गया है,चाहे वह सरकारी योजनाओं का लाभ उठाना हो या बैंक में खाता खुलवाना। 10 साल पुराने आधार कार्ड में पते और फोटो में बदलाव की जरूरत हो सकती है, जिससे व्यक्ति की सटीक पहचान और जनसंख्या की जानकारी सुनिश्चित की जा सके। आधार में जानकारी अपडेट करना इसलिए भी महत्वपूर्ण है ताकि किसी प्रकार की धोखाधड़ी रोकी जा सके और सरकारी रिकॉर्ड सही रहे।

किसके आधार कार्ड होंगे रद्द?

यूआईडीएआई ने बताया कि भोपाल में ऐसे करीब 65 हजार लोगों का आधार कार्ड रद्द किया जा सकता है, जिन्होंने अभी तक अपने आधार कार्ड में अपडेट नहीं कराया है। अगर इन लोगों ने 14 दिसंबर से पहले अपने आधार कार्ड में जरूरी बदलाव नहीं किए, तो उनका आधार कार्ड अमान्य हो सकता है।

आधार कार्ड अपडेट करने का तरीका

माई आधार पोर्टल पर जाएं: अपने आधार नंबर और मोबाइल नंबर से लॉगिन करें।

दस्तावेज अपलोड करें: अपनी पहचान और पते को प्रमाणित करने वाले नए दस्तावेज जैसे राशन कार्ड, मतदाता पहचान पत्र, जन-आधार कार्ड, भारतीय पासपोर्ट आदि को अपलोड करें।

फ्री ऑनलाइन अपडेट: इस सेवा के लिए कोई शुल्क नहीं है, इसे फ्री में किया जा सकता है।

कौन से दस्तावेज आवश्यक हैं?

राशन कार्ड
मतदाता पहचान पत्र
निवास प्रमाण पत्र
जन-आधार कार्ड
मनरेगा जॉब कार्ड
भारतीय पासपोर्ट
पैन या ई-पैन कार्ड
ड्राइविंग लाइसेंस

14 दिसंबर डेडलाइन है अंतिम मौका

यूआईडीएआई ने 10 साल पुराने आधार कार्ड में जानकारी अपडेट के लिए यह डेडलाइन पहले तीन बार बढ़ाई थी–पहले 14 मार्च, फिर 14 जून, और उसके बाद 14 सितंबर। अब इसे अंतिम बार 14 दिसंबर तक के लिए बढ़ाया गया है। जिन लोगों ने अब तक आधार कार्ड में जानकारी अपडेट नहीं कराई है, उनके पास इसे करने का यही आखिरी मौका है।

आरजेडी के साथ हो गया बड़ा खेला

» पार्टी के 4 लाख कार्यकर्ता और नेताओं का डेटा लीक...

» किसी राजनीतिक पार्टी ने आरजेडी पर मारी है सेंध...

पटना,03 नवंबर 2024(ए)। बिहार की राजनीति से इस वक्त एक बड़ी खबर सामने आई है कि राष्ट्रीय जनता दल के सक्रिय सदस्यों का डेटा लीक हो गया है। जानकारी के अनुसार आरजेडी के साढ़े चार लाख सक्रिय सदस्यों और नेताओं का डेटा लीक किया गया है, जिससे पार्टी के अंदर खलबली मच गई है।

राजद के कार्यकर्ताओं को जा रहा फोन

मामले की जानकारी मिलने के बाद आरजेडी के आलाकमान गंभीरता से इस विषय को अपने स्तर पर देख रहे हैं। कहा जा रहा है कि प्रशांत किशोर की पार्टी जन सुराज पार्टी की तरफ से आरजेडी के कई सक्रिय सदस्य और नेताओं को फोन जा रहे हैं उनके बारे में कई बातें बताई जा रही हैं उसके बाद इस बात का खुलासा हुआ है। राजद ने इसे बड़ी साजिश करार दिया है और विरोधी दलों की ओर इस साजिश के लिए जिम्मेदार ठहराया है।

जगदानंद सिंह ने जताई थी चिंता

राजद ने पार्टी के भीतर डाटा लीक होने के मामले की अंदरूनी जांच शुरू कर दी है। आरजेडी से कैसे और कहां से डेटा लीक हुआ इसकी जांच कराई जा रही है। प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह ने पार्टी के भीतर इस बात को लेकर चिंता जताई है। जगदानंद सिंह ने पहले भी राजद कार्यकर्ताओं और नेताओं के जन सुराज में शामिल होने को लेकर चिंता जताई थी।

राजद प्रवक्ता ने कही ये बात...

वहीं, इस मामले को लेकर जब आरजेडी प्रवक्ता मृत्युंजय तिवारी से यह पूछा गया कि, क्या प्रशांत किशोर आपके नेताओं को फोन कर रहे हैं? इस पर उन्होंने कहा कि, यह कौन लोग हैं, इससे हमको क्या लेना देना. इन लोगों की हैसियत क्या है? राजनीति में यह लोग व्यापारी और व्यवसाय हैं। राष्ट्रीय जनता दल गरीब, नौजवान, किसान और मजदूरों का बल है. डेटा लीक हो या ना हो इससे कोई फर्क आरजेडी को नहीं पड़ता।

थप्पड़ ने कैसे बिगाड़ा पूरा खेल? जमकर हंगामा

» पुलिसकर्मियों को बंधक बनाया...

मेरठ,03 नवंबर 2024(ए)।मेरठ में अवैध वसूली के आरोप में दो दारोगा को ग्रामीणों ने बंधक बना लिया. आरोप है कि दो दारोगा गांव में अवैध वसूली करने गए थे और वहां उन्होंने एक युवक को थप्पड़ मार दिया, जिसके बाद हंगामा हो गया। इस दौरान गांव के लोगों ने दोनों को बंधक बना लिया। सूचना लगते ही मौके पर तीन थानों की पुलिस पहुंच गई और जैसे-तैसे दोनों को छुड़ाया गया। इस दौरान करीब घंटों तक हंगामा चलता रहा. जिसका वीडियो वायरल हो रहा है। फिलहाल पुलिस का कहना है कि जांच की जा रही है, जो भी दोषी पाया जाएगा उसके खिलाफ एक्शन लिया जाएगा। मामला मेरठ के थाना परीक्षितगढ़ थाना क्षेत्र का है. आरोप है कि शनिवार रात को गांव गोविंदपुरी में दो दारोगा पहुंचे और युवक पर अवैध पटाखे बेचने का आरोप लगाया। साथ ही दोनों उससे पैसे भी मांगने लगे. इस दौरान दोनों की युवक से कहासुनी हो गई। इसके बाद एक दारोगा ने युवक को पीट दिया। जिसके बाद वहां मौजूद अन्य लोग भड़क गए और दोनों को बंधक बना लिया। दोनों दारोगा की पहचान सत्येंद्र और अंडर ट्रेनी शिवम के रूप में हुई है। मारपीट और हंगामा की सूचना पर गांव के अन्य लोग भी इकट्ठा हो गए और हंगामा करने लगे। इसके बाद दोनों दारोगाओं के बंधक बनाने की जानकारी कंट्रोल रूम को दी गई और तीन थानों की पुलिस ने पहुंच कर गांव के लोगों से छुड़ाया। दोनों दारोगा पर पुलिस ने कार्रवाई का आश्वासन दिया और ग्रामीणों को शांत किया।

गांव के लोगों का आरोप है कि दोनों दारोगा नशे में थे और वहां पिस्टल तानने की भी कोशिश की. इस पूरी घटना का वीडियो भी सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। जिसमें हंगामा होता दिख रहा है और दारोगा कानून अपने हाथ में न लेने की बात कह रहे हैं और हिंसा न करने की बात कह रहे हैं।

संपादकीय

रिपोर्टों के पीछे मकसद क्या है?

ऐसी रिपोर्टें कई दशक से जारी हो रही हैं। अब यह कहने का आधार है कि इनसे गरीबी की ठोस समझ बनाने में कोई मदद नहीं मिली है। इसलिए अब यह सवाल उठाने का वक्त है कि इन रिपोर्टों के पीछे मकसद क्या है? बीते हफ्ते के आरंभ में वैश्विक गरीबी पर में विश्व बैंक की रिपोर्ट आई। सप्ताहांत में संयुक्त राष्ट्र ने इसी संबंध में अपनी रिपोर्ट जारी की। विश्व बैंक विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) और ऑक्सफॉर्ड यूनिवर्सिटी स्थित ऑक्सफॉर्ड पॉवर्टी एंड ह्यूमन डेवलपमेंट इनिशिएटिव पिछले कई वर्षों से गरीब लोगों की संख्या के बारे में अपना साझा अनुमान जारी कर रहे हैं। अपनी ताजा रिपोर्ट में उन्होंने भारत के बारे में कहा है कि यहां 23 करोड़ 40 लाख लोग चरम गरीबी में जी रहे हैं। विश्व बैंक ने ये संख्या 13 करोड़ 40 लाख बताई थी। ये दोनों आधिकारिक संस्थाएं हैं। इनके अलावा कुछ एनजीओ भी अपना अनुमान जारी करते हैं। उनसे भी अलग संख्या सामने आती है।ऐसी रिपोर्टें कई दशक से जारी हो रही हैं। इसलिए अब यह कहने का आधार है कि इनसे गरीबी को समझने या उससे लोगों को मुक्ति दिलाने के बारे में कोई ठोस सोच नहीं बनती है। उलटे भ्रम पैदा होता है। इसलिए अब यह सवाल उठाने का वक्त है कि इन रिपोर्टों को तैयार करने के पीछे मकसद क्या है? उद्देश्य दुनिया में गरीबी खत्म करना है, तो फिर ये संस्थाएं न्यूनतम और भ्रामक पैमाने क्यों अपनाती हैं? नव-उदारवादी दौर के पहले एक मान्य फॉर्मूला व्यक्तियों को उपलब्ध कैलोरी होती थी। भारत में गांवों में जिन लोगों को रोजाना 2200 और शहरों में 2100 से कम कैलोरी उपलब्ध थी, उन्हें गरीब समझा गया था।अनेक गंभीर अर्थशास्त्रियों दिखाया है कि आज इस कैलोरी उपलब्धता से वंचित लोगों की संख्या तब से ज्यादा है। वजह यह है कि शिक्षा, स्वास्थ्य एवं परिवहन जैसी सेवाओं का निजीकरण होने का बोझ लोगों की निजी आमदनी पर पड़ा है। इस कारण उन्हें अपनी जरूरतों में कटौती करनी पड़ी है। इस बात के आधिकारिक आंकड़े हैं कि बहुत से गरीब लोगों ने अपने भोजन में कटौती की है। जबकि शिक्षा एवं इलाज जैसी अनिवार्यताओं पर बढ़े खर्च की गणना खर्च क्षमता में करके विश्व बैंक करोड़ों लोगों को गरीबी रेखा से उठा बता देता है। ऐसी ही विसंगतियां संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट में भी हैं। फिर भी ऐसी रिपोर्टों का सिलसिला जारी है।

कांग्रेस फिर एक बार अपनी हार का ठीकरा ईवीएम पर फोड़ने को तैयार

कांग्रेस फिर एक बार अपनी हार का ठीकरा ईवीएम पर फोड़ने को तैयार होती दिख रही है। हरियाणा विधानसभा चुनावों में हार की बजह टटोलने के लिए पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे जो तीन सदस्यीय टीम बनाई उसमें शामिल नेता शायद ऐसा ही जबाव अपने नेता को देने की तैयारी में हैं। यह अलग बात है कि इस फ़ैक्ट्री फ़ाइंडिंग कमेटी में हरियाणा के पूर्व सीएम और इस चुनाव का सारा दारोमदार संभालने वाले भूपेन्द्र सिंह हुड्डा शामिल नहीं किए गए हैं।पर जिन्हें ज़िम्मेदारी दी गई है उनके नाम उजागर भले नहीं किए गए हैं पर कांग्रेसी सूत्र बता रहे हैं कि राजस्थान और छत्तीसगढ़ के जो दो नेता जाँच के लिए हरियाणा भेजे गए उन्हें ज़मीनी स्तर पर लोगों से इस हार के कारणों को टटोलने के निर्देश दिए गए हैं।पर भला हार की इस निराशा में नेताओं की कितनी हिम्मत रहेगी घर-घर घूम कर हार की बाबत लोगों से पूछने की और सवाल उम्र का भी है सो आराम भी ज़रूरी होगा ही। तभी अगर दिल्ली के कांग्रेसी ही यह कहने लगें कि फ़ैक्ट्री पता करने गए ये दो नेता होटल में ठहर मोबाइल या फिर फ़ोन पर लोगों से बात कुछ पूछने के नाम पर यह पूछ रहे हों कि कि क्या हम ईवीएम की बजह से हारे हैं। तो नेता पर शक तो कोई भी कर ही सकता है ना! तब भला फ़ैक्ट्री फ़ाइंडिंग का मतलब भी क्या रह जाता है। अब भला हरियाणा हार का घूँट तो कांग्रेसी पाकर रह जाएंगे पर चिंता तो बाक़ी उन सूबों की सता रही है जहां हरियाणा हार का असर पड़ता कांग्रेसियों को दिख रहा है। भला होता कि गुटबाज़ी छोड़ कांग्रेसी हरिया जीतते और फिर बाक़ी सूबों में सीना तान कर चुनाव लड़ रहे होते।हरियाणा में जीत और जम्मू-कश्मीर में बेहतर प्रदर्शन से भाजपा ही नहीं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ उत्साहित हैं। और तभी अब संघ महाराष्ट्र या झारखंड के चुनाव के लिए ही नहीं दिल्ली चुनाव को जीतने की तैयारी में लगा बताया जा रहा है। पिछले दिनों संघ की रणथंभोर में हुई दो दिन की बैठक हुई बैठक से दिल्ली के नेता खुश हैं। यह अलग बात है कि भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा की लोकसभा चुनावों के दौरान संघ को लेकर बयानबाज़ी से संघ के नेता नाराज बताए जा रहे थे पर हरियाणा की जीत ने इस नाखुशी को ख़त्म कर दिया ।चर्चा तो यह भी बताई जा रही है कि भाजपा के नए राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाने को लेकर भी संघ अब दखल देने की जगह खुद को अलग रखे हुए हैं। भाजपा के ही कुछ नेतो यहाँ कह रहे हैं कि पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे पी नड्डा की संघ को लेकर बयानबाज़ी के बाद संघ के मोंहन भागवत की नाराजग़ी के बावजूद जानते थे कि उनकी यह नाराजग़ी हरियाणा चुनाव में जीत के बाद ख़त्म हो जाएगी ,और हुआ भी ऐसा ही। संघ के ही एक अदने क़द के नेता तो यह भी कहने नहीं चूके कि संघ जानता है कि मोदी है तो मुमकिन है। ज़ाहिर है कि 2025 में विभिन्न राज्यों में होने जा रहे विधानसभा चुनावों को लेकर संघ तैयारी में लग गया है। बताया तो यह भी जा रहा है कि रणथंभोर में हुईसंघ की मीटिंग में ही दिल्ली चुनाव को लेकर भाजपा विधायकों,सांसदों और प्रांत व विभाग प्रमुखों को चुनावों की तैयारी में लग जाने को कह दिया है। दिल्ली के वरिष्ठ भाजपा विधायक की मानो तो संघ और पार्टी इस बार किसी भी शर्त पर दिल्ली का अपना वनबास ख़त्म करना चाहती है। अब संघ के बूते भाजपा क्या कर गुजरती है देखना बाक़ी है।भाजपा दिल्ली की सत्ता के लिए बेताब हैं। अगले साल होने वाले विधानसभा चुनावों में भाजपा को सत्ता में बैठी आप पार्टी के अलावा कांग्रेस से चुनौती मिलनी है। दिल्ली के बदलते हालातों को देख भाजपा को आप पार्टी कमजोर होती दिख रही है। पार्टी के कई नेता मान बैठे हैं कि आप का मुस्लिम और दलित वोट आप से खिसक कर कांग्रेस की ओर जा सकता है ऐसे में इन दोनों पार्टियों के बीच वोटों की खींचातानी से भाजपा को राजनीतिक तौर पर फ़ायदा हो सकेगा। और तभी भाजपा इस चुनाव में कोई कोर कसर नहीं छोडऩा चाहती है। अब अगर कोई यह मान रहा हो कि भाजपा की यह रणनीति लोकसभा चुनाव के बाद बनी है तो ऐसा भी नहीं है। भाजपाई सूत्र मानते हैं कि लोकसभा चुनावों में टिकट बँटवारे के पहले ही भाजपा दिल्ली को लेकर चिंतित थी। और तभी उसने अपने सात में से छह सांसदों के टिकट काट नए चेहरे मैदान में उतारे। और सभी जीते भी। पर इनमें से तीन सांसदों को विधानसभा चुनावों उतारे जाना तय माना जा रहा है ।इनमें रमेश बिधूडी ,प्रवेश वर्मा,और मीनाक्षी लेखी शामिल बताए जा रहे हैं। अब भले बाक़ी पूर्व सांसदों पर पार्टी दांव लगती है या नहीं यह अलग बात है पर चर्चा तो है कि इन तीनों को चुनाव की तैयारी शुरू करने के लिए भी कह दिया गया है। दिल्ली विधानसभा का कार्यकाल फ़रवरी 2025 तक है। यानी चुनाव इसके बाद ही होने हैं। सत्ता में बैठी आप पार्टी ने चुनावी तैयारी एक हफ़्ते पहले ही से की हुई है। कांग्रेस ने ब्लाक और ज़िला स्तर पर संगठन को मज़बूत करना शुरू कर दिया है। तो भाजपा पीछे भी कैसे रहती सो उसने भी जिताऊ नेताओं से तैयारी का इशारा किया है। 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने दिल्ली की सातों सीटें बेख़ौफ़ जीती हैं सो हौसला उसका भी कोई कम बुलंद नहीं है। मुक़ाबला तिकोना होना है। तीनों पार्टियों में इस बार घमासान है।

-अनिल चतुर्वेदी-

प्रकाशकः दैनिक घटती-घटना

जिनपिंग के दिमाग के कोने में भारत की जीरो अंहमियत

भारत के प्रति चीन इंच भर (हां, इंच भर) न नर्म होगा, न पीछे हटेगा। इसका फिर प्रमाण 23 अक्टूबर 2024 की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति शी जिन पिंग की मुलाकात है। वैश्विक राजनीति के परिपेक्ष्य में मुझे भारत के विदेश मंत्री, विदेश सचिव के बयानों से चीन के लचीले बनने की उम्मीद थी। लगा लद्दाख क्षेत्र की सीमा पर चीन अप्रैल 2020 से पूर्व की यथास्थिति लौटा देगा। भारतीय सेना जिस इलाके में पैट्रोलिंग करती थी, वहां वह वापिस करने लगेगी। चीन यदि अपने कब्जाएं 2000 वर्गकिलोमीटर भारतीय क्षेत्र से सैनिक हटाता है, दोनों देशों की सेनाएं आमने-सामने के गतिरोध से पीछे हटती है तो भारत का चीन पर विश्वास बनेगा। दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाला देश तब मन से चीन का दोस्त होगा। और चीन-रूस मिलकर विश्व राजनीति में अपनी जो अलग व्यवस्था बना रहे है उसमें भारत साझेदार या परोक्ष समर्थक होगा। वह सैनिक-सुरक्षा चिंता में अमेरिका-पश्चिमी देशों की और देखना रोक देगा। इससे चीन-रूस के पश्चिमी देशों के खिलाफ शक्ति परीक्षण,नई विश्व व्यवस्था, वित्तिय व्यवस्था के एजेंडे को बल मिलेगा। आखिर 140 करोड़ लोगों की आबादी का देश डालर में लेन-देन के सिस्टम से युआन-रूबल मिक्स करेंसी के एक्सचेंज का आंशिक सहभागी भी बने तो उथल-पुथल होगी।वास्तविकता है ताईवान को ले कर चीन की अमेरिका से जबरदस्त ठनी हुई है। उसकी आर्थिकी अमेरिका-योरोप की घेरेबंदी से मंदी की मारी है। वह रूस के साथ सैनिक-सामरिक-आर्थिकी की साझेदारी से दुनिया का अछूत हुआ है तो ऐसे में भारत यदि उसके मंसूबों की नई विश्व व्यवस्था में उसका साझेदार या मौन पैरोकार भी बने तो रूस-चीन के झंड़े का दबदबा बढ़ेगा। जब दांव इतने ऊंचे और भविष्य दृष्टि के है तब लद्दाख क्षेत्र के बंजर पठार के 2000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में चीन अपनी सेना को अप्रैल 2020 की स्थिति में लौटा ले तो नुकसान से ज्यादा उसे फायदा है!मगर नहीं! चीन की मनोदशा में इंच भर पीछे हटने या झुकने की वृति नहीं है। माओं, चाऊएनलाई, देंग और शी जिन पिंग के समय में बार-बार जाहिर हुई भारत के प्रति हिकारत का उसका रवैया जस का तस है। चीन भारत का वह पड़ौसी है जो धूर्त, स्वार्थी है तो तलवारधारी विश्व व्यापारी भी है। इक्कीसवीं सदी में वह भारत सहित पूरी दुनिया को अपनी वर्चस्ववादी धुरी का पुछल्ला बनाने की जिद्द ठाने हुए है। उसके रोडमैप में अब एक कदम पीछे दो कदम आगे का व्यवहार भी नहीं है। उसे व्यापार और आर्थिकी की रणनीति में भारत को पुछल्ला बनाना ही है।फिलहाल उसके ताजा इरादों पर गौर करें। एक, चीन ने रूस को अपनी फैंचाइंजी बना लिया है। रूस उस पर आश्रित है। उसका कंधा है। राष्टपति शी जिन पिंग जो कहेंगे वही पुतिन करेंगे। पुतिन कतई शी जिन पिंग को नहीं समझा सकते है। दो, चीन-रूस का एकीकृत मिशन अमेरिका-पश्चिम की केंद्रीकृत धुरी के आगे अपनी नई विश्व व्यवस्था बनाना है। तीन, चीन ने इसके लिए दुनिया भर के छोटे-गरीब देशों को बेइंतहा पैसा दे कर उन्हे अपना मोहताज बनाया है। भारत के सभी पड़ोसी चीन पर आश्रित है। अर्थात वह देशों की संख्यात्मक ताकत बनाते हुए है। चार, भारत, जापान, आस्ट्रेलिया जैसे देशों को चीन ने सैनिक दबाव और व्यापार के दोहरे कारणों से दुविधा, चिंता तथा आयातों की निर्भरता में ऐसा फंसाया है कि भारत के विदेश मंत्री को सार्वजनिक तौर पर यह मजूबरी बतलानी पड़ती है कि यह मुद्दा (व्यापार) जटिल है और इसमें ब्लैक एंड व्हाइट जैसा कुछ नहीं है। पांच, ब्रिक्स की बैठक में नेटो सदस्य तुर्की को न्यौत कर तथा मिस्र, इथियोपिया की सदस्यता का अर्थ है कि चीन-रूस ने उत्तर-मध्य एसिया के सभी इस्लामी देशों के अलावा पाकिस्तान से तुर्की तक फैले पूरे पश्चिम एसिया, उत्तर अफ्रिका के उस सभ्यतागत क्षेत्र को अपने प्रभाव में लेने का ब्ल्यूप्रिंट बनाया है जहां इस्लामी देशों (विशेषकर यहूदी इजराइल के परिपेक्ष्य में) की गोलबंदी भविष्य में चीनी सभ्यता का खंभा हो सकती है।तभी चीन और राष्टपति शी जिन पिंग के दिमाग के कोने में भारत की जीरो अंहमियत है। चीन का थिंकटैंक जानता है 140 लोगों का भारत कभी ईस्टइंडिया कंपनी से चलता था अब अदानी-अंबानी से चलता है। अदानी-अंबानी, कारोबारियों को मैनेज करों, उनका मुनाफा बनवाओं तो अपने आप प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कजाक भागे आएंगे। विदेश मंत्री जयशंकर, विदेश मंत्रालय खुद ही हैडलाइन बना डालेंगे कि भारत और चीन पूर्वी लद्दाख में वास्तविक नियंत्रण रेखा पर गश्त के पैटर्न को लेकर एक समझौते पर पहुंच चुके हैं। प्रधानमंत्री मोदी कजाक जा कर राष्टपति से मुलाकात कर रहे है। फिर भले हम-आप और दुनिया खोजती रहे कि भारत के सैनिक क्या सचमुच डेपसांग, गलवान, गोगरा, पैंगॉन्ग के नॉर्थ ब्लॉक और कैलाश रेंज में वैसे ही गस्त लगाते हुए है जैसे अप्रैल 2020 से पहले लगा रहे थे?

-हरिशंकर व्यास-

कविता
बहन का प्रेम

घटती-घटना
लक्ष्मीनारायण सेन
गरियाबंद, छत्तीसगढ़

भाई बहन का प्यार होता अटूट
एक दूजे के लिए प्रेम है कूट-कूट
दोनों के बीच होता बात छूट पूट
मना लेते जाते कभी दोनों रूठ।।
लंबी उम्र की करती कामना
न हो जीवन में दुख से सामना
पूर्ण हो भैया तेरा मनोकामना
यही है सदा मेरा शुभकामना।।
सफलता मिले इन्हें अपार
करो प्रभु मुझ पर उपकार
मेरे जिंदगी का यह सार
देना भगवन मुझे ये उपहार।।
मिले भले हमें कोई यातना
सुनना नाथ मेरा यह याचना
संकट से न हो इनका सामना
पूर्ण हो ईश्वर मेरी यह कामना ।।

अधिक बच्चे पैदा करने के नायडू के बयान पर भाजपा मौन

आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री चन्द्रबाबू नायडू और तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम के स्टालिन ने अपने राज्य के लोगों से दो अधिक बच्चे पैदा करने की मांग की है। सर्वाधिक आश्चर्य यह है कि इन दो राज्यों के मुख्यमंत्रियों की इस मांग के बावजूद भारतीय जनता पार्टी ने चुप्पी साध रखी है। मुसलमानों को दो से अधिक बच्चे पैदा करने पर परोक्ष और प्रत्यक्ष तौर पर कोसने वाली भाजपा इन दो मुख्यमंत्रियों की मांग पर पूरी तरह मौन है। कारण साफ है चन्द्रबाबू नायडु ने केंद्र की भाजपा सरकार को अपनी पार्टी तेलगुदेशम पार्टी के सांसदों का समर्थन दे रखा है। दूसरे शब्दों में कहे तो केंद्र की मोदी सरकार नायडु की बैसाखियों पर टिकी है। इसलिए दो से ज्यादा बच्चे पैदा करने के नायडू के बयान पर भाजपा ने मौन रखना ही बेहतर समझा। इसमें भाजपा को देश के लिए वैसा खतरा नजर नहीं आया, जैसा मुसलमानों की जनसंख्या वृद्धि को लेकर दिखाई देता है। नायडू के बाद तमिलनाडु के मुख्यमंत्री ने एक कार्यक्रम में कहा था कि लोगों को 16 बच्चे पैदा करने चाहिए। यह बात उन्होंने सरकारी विवाह योजना के तहत 31 जोड़ों के विवाह समारोह में कही। स्टालिन का यह सुझाव नायडू द्वारा यह खुलासा किए जाने के एक दिन बाद आया है कि आंध्रप्रदेश में उनकी सरकार एक ऐसा कानून बनाने की योजना बना रही है, जिसके तहत केवल दो से अधिक बच्चों वाले लोगों को ही स्थानीय निकाय चुनाव लडऩे की अनुमति होगी। जनसंख्या के आधार पर संसदीय निर्वाचन क्षेत्रों को फिर से परिभाषित करने की कवायद 2026 में होने वाली है। इससे लोकसभा सीटों की संख्या 543 से बढ़कर 753 हो जाएगी। दक्षिण में क्षेत्रीय दलों को डर है कि इससे अधिक आबादी वाले राज्यों में सीटों की संख्या में भारी उछाल आएगा, जबकि दक्षिण में यह वृद्धि मामूली होगी।

भारत के आर्थिक विकास में जन जाति समाज का है भरपूर योगदान

शुरुआती दौर में तो जनजाति समाज उक्त वर्णित वनस्पतियों एवं उत्पादों का उपयोग केवल स्वयं की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ही करते रहे हैं परंतु हाल ही के समय में इन वनस्पतियों का उपयोग व्यावसायिक रूप से भी किया जाने लगा है।

भारत भूमि का एक बड़ा हिस्सा वनों एवं जंगलों से आच्छादित है। भारतीय नागरिकों को प्रकृति का यह एक अनोखा उपहार माना जा सकता है। इन वनों एवं जंगलों की देखभाल मुख्य रूप से जनजाति समाज द्वारा की जाती रही है। जनजाति समाज की विकास यात्रा अपनी भूख मिटाने एवं अपने को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से केवल वनों के इर्द गिर्द चलती रहती है। वास्तविक अर्थों में इसीलिए जनजाति समाज को धरतीपुत्र भी कहा जाता है। प्राचीन काल से केवल प्रकृति ही जनजाति समाज की सम्पत्ति मानी जाती रही है, जिसके माध्यम से उनकी सामाजिक, आर्थिक एंव पारिस्थितिकीय आवश्यकताओं की पूर्ति होती रहती है। ऐसा कहा जाता है कि अनादि काल से जनजाति संस्कृति व वनों का चोली दामन का साथ रहा है और जनजाति समाज का निवास क्षेत्र वन ही रहे हैं। इस संदर्भ में यह भी कहा जा सकता है कि वनों ने ही जनजातीय जीवन एंव संस्कृति के उद्भव, विकास तथा संरक्षण में अपनी आधारभूत भूमिका अदा की है। भील वनवासियों का जीवन भी वनों पर ही आश्रित रहता आया है। जनजाति समाज अपनी आजीविका के लिए वनों में उत्पन्न होने वाली विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का उपयोग करते रहे हैं।

भारतीय वन क्षेत्रों में पाए जाने वाले प्रमुख वनस्पतियों, पेड़ों एवं उत्पादित वस्तुओं में शामिल रहे हैं बबूल, बेर, चन्दन, धोक, धामन, धावड़ा, गुदी, हल्दू, इमली, जामुन, कजरी, खेजड़ी, खेड़ा, कुमटा, महुआ, नीम, पीपल, सागवान, आम, मुमटा, सालर, बानोटीया, गुलर, बांस, अरीठा, आंवला, गोंद, खेर, केलडी, कडैया, आवर, सेलाई वृक्षों से करा, कत्था, लाख, मौम, धोली व काली मुसली, शहद, आदि। इनमें से कई वनस्पतियों की तो औषधीय उपयोगिता है। कुछ जड़ी बूटियों जैसे आंवला का बीज, हेतड़ी, आमेदा, आक, करनीया, ब्राह्मी, बोहड़ा, रोंजडा, भोग पत्तियां, धतुरा बीज, हड, भुजा, कनकी बीज, मेंण, अमरा, कोली, कादां, पडूला, गीगचा, इत्यादि का उपयोग रोगों के निवारण के लिए किया जाता रहा है। आमेदा के बीजों को पीसकर खाने से दस्त बंद हो जाते हैं। अरण्डी के तेल से मालिश एंव पत्तों को गर्म करके कमर में बांधने से दर्द कम हो जाता है। बुखार को ठीक करने के लिए कड़ा वृक्ष के बीजों को पीस कर पीते हैं। जोडों में दर्द ठीक करने के लिए ग्वार व सैजने के गोंद का उपयोग करते हैं। फोडे फुन्सियों एवं चर्म रोग को ठीक करने के लिए नीम के पत्तों को उबालकर पीते हैं। इसके अलावा तुलसी, लौंग, सोठ, पीपल, काली मिर्च का उपयोग बुखार एवं जुखाम ठीक करने के लिए किया जाता है। शुरुआती दौर में तो जनजाति समाज उक्त वर्णित वनस्पतियों एवं उत्पादों का उपयोग केवल स्वयं की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ही करते रहे हैं परंतु हाल ही के समय में इन वनस्पतियों का उपयोग व्यावसायिक रूप से भी किया जाने लगा है। व्यावसायिक रूप से किए जाने वाले उपयोग का लाभ जनजाति समाज को न मिलकर इसका पूरा लाभ समाज के अन्य वर्गों के लोग ले रहे हैं। उक्त वनस्पतियों एवं उत्पादों का व्यावसायिक उपयोग करने के बाद से ही प्रकृति का दोहन करने के स्थान पर शोषण किया जाने लगा है क्योंकि कई उद्योगों द्वारा उक्त उत्पादों का कच्चे माल के रूप में उपयोग किया जाने लगा है। इससे ध्यान में आता है कि जनजाति समाज द्वारा देश की अर्थव्यवस्था में विकास को गति देने के उद्देश्य से अपनी भूमिका का निर्वहन तो बहुत सफल तरीके से किया जाता रहा है परंतु अर्थव्यवस्था के विकास का लाभ जनजातियों तक सही मात्रा में पहुंच नहीं सका है।

-प्रहलाद सबनानी-

प्रकाशकः दैनिक घटती-घटना

कविता
भोले से मनुहार

घटती-घटना
कार्तिकेय कुमार त्रिपाठी
इन्दौर,मध्यप्रदेश

मन की मनुहार है,
भोले से प्यार है,
सरगम की धुन में ही,
जीवन का सार है।
मन की मनुहार ...
कल्पना के सागर में,
भोले उतराए हैं,
दिल की धड़कनों में,
बस भोले समाए हैं ।
मन की मनुहार ...
भोले के आने की,
आहट हुई है,
मन में भी थोड़ी,
अकुलाहट हुई है।
मन की मनुहार ...
लगन लगी भोले से,
मन भर की देखो,
बदली है रुत अब,
भोले को देखो।
मन की मनुहार ...
दुनिया करें चाहें,
कैसी भी बातें,
हमको तो बस,
भोले ही हैं भाते।
मन की मनुहार ...

समाचार पत्र में छपे समाचार एवं लेखों पर सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है। हमारा ध्येय तथ्यों के आधार पर सटिक खबरें प्रकाशित करना है न कि किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाना। सभी विवादों का निपटारा अम्बिकापुर न्यायालय के अधीन होगा।

CMYK

चार दिवसीय महा पर्व छठ की तैयारी जोरों पर,की जा रही साफ-सफाई

-संवाददाता-
अंबिकापुर,03 नवम्बर 2024
(घटती-घटना)। चार दिवसीय महा पर्व छठ 5 नवंबर को नहान खान के साथ शुरू हो जाएगा। इसे लेकर तैयारी जोरों पर चल रही है। विशेषकर छठ घाटों की साफ-सफाई रंगरोगन करने की तैयारी युद्ध स्तर पर चल रहा है। लोग श्रमदान कर छठ घाटों को स्वच्छ व सुन्दर बनाने में जुटे हैं। अंबिकापुर स्थित शंकरघाट की सफाई पिछले कई दिनों से चल रहा है।
वहीं रविवार को समाज सेवी संस्था अनोखी सोंच के सदस्यों द्वारा घाट की सफाई की गई। मां महामाया सेवा समिति के अध्यक्ष विजय सोनी ने बताया कि हर वर्ष छठ व्रतियों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। पहले झारखंड, बिहार व यूपी के मूल निवासी ही छठ व्रत करते थे, लेकिन अब यहां स्थानीय लोग भी बड़े ही श्रद्धा के साथा छठ का व्रत कर रहे हैं। इस वर्ष भी बड़ी संख्या में छठ व्रतियों के शामिल होने की उम्मीद है। श्रद्धालुओं की संख्या को देखते हुए तैयारी पूर्व से ही शुरू करा दी गई है। शंकर घाट स्थित छठ घाट पर चारो तरफ गोबर से पोताई की गई है। वहीं टेंड पंडाल के साथ-साथ जलाश्य की सफाई की गई है। रविवार को अनोखी सोंच संस्था के सदस्यों ने श्रमदान कर जलाश्य की सफा सफाई की है। चार दिवसीय महा पर्व छठ 5 नवंबर को नहान खान के साथ शुरू हो जाएगा। इस दिन व्रति शुद्धता के साथ चने का दाल, चावल व लौकी की सब्जी खाएंगे। वहीं 6 नवंबर को घाट बंधान व खीर भोजन का विधि किया जाएगा। इसके बाद 7 नवंबर की संध्या डूबते हुए सूर्य को अर्घ्य दिया जाएगा। वहीं 8 नवंबर की सुबह उदीयमान सूर्य को अर्घ्य के साथ छठ संपन्न हो जाएगा। छठ की तैयारी शहर के शंकर घाट, घुनघुट्टा सहित विभिन्न तालाबों, जलाशयों में तैयारी जोरों पर चल रही है। शंकर घाट व घुनघुट्टा में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं भीड़ पहुंचती है। इन दोनों स्थानों पर कई दिनों से तैयारी चल रही है।

प्रदेश पर थोप दिया गया है अकुशल, अनुभवहीन और कठपुतली सरकार

-संवाददाता-
अंबिकापुर,03 नवम्बर 2024
(घटती-घटना)। बलरामपुर पुलिस अभिरक्षा में हुई युवक की मौत एवं कबीरपंथ के धर्मगुरु वंशाचार्य उदितमन नाम साहेब पर हमले के विरोध में रविवार को जिला कांग्रेस कमेटी सरगुजा ने 1 दिवसिय धरना प्रदर्शन किया। हाल ही में बलरामपुर पुलिस थाना में पुलिस अभिरक्षा में गुरुचरण मंडल नामक संविदा स्वास्थ्य कर्मचारी की संदेहास्पद परिस्थितियों में मौत हो गई। उसके परिजनो ने पुलिस प्रताडना से उसकी मृत्यु का आरोप लगाया है। बलौदा बजार में सतनामी समाज के पवित्र स्थल को खंडित करने के बाद कबीरपंथी समाज के धर्मगुरु वंशाचार्य उदितमन नाम साहेब व उनके आश्रम पर शुक्रवार को उपद्रवियों ने आतिशबाजी से हमला करने के साथ ही पथराव भी किया, जो सामाजिक सौहार्द्र को बिगाडने की कारवाई है। इन सभी घटनाओं के विरोध में जिला कांग्रेस कमेटी सरगुजा ने आज डॉटा सेंटर, गांधी चौक पर 1 दिवसिय धरना प्रदर्शन किया। इस दौरान आयोजित सभा को संबोधित करते हुए अम्बिकापुर महापौर डॉ अजय तिर्की ने कहा कि बलरामपुर की घटना ने कानून व्यवस्था की जिम्मेदारी सम्हालने वाले पुलिस विभाग के प्रति समाज को भयक्रॉत किया है। मौजूदा पुलिस व्यवस्था के प्रति समाज के विश्वास को बहाल करने के लिये आवश्यक है कि पुलिस प्रताडना में शामिल पुलिस कर्मियों को बर्खास्त करने के साथ ही मामले की माननीय उच्च न्यायालय के सिटिंग जज से न्यायायिक जांच भी कराई जाये। सभा को संबोधित करते हुए निगम सभापति एवं 20 सूत्रिय आयोग के पूर्व उपाध्यक्ष अजय अग्रवाल ने कहा कि प्रदेश की विष्णुदेव साय सरकार चिकना घडा हो गई है। प्रदेश में एक के बाद एक अपराध की घटनाएं बदस्तूर बढ रही है। लेकिन सरकार का तंत्र कारवाई में विफल है। पुलिस अभिरक्षा में जिस प्रकार मौतें हो रही है उसको देख ऐसा लग रहा है कि प्रदेश का राजनैतिक नेतृत्व प्रशासन पर लगाम लगाने में अक्षम है।सभा को संबोधित करते हुए प्रदेश कांग्रेस महामंत्री द्वितेन्द्र मिश्रा ने कहा कि प्रदेश सरकार कानून-व्यवस्था को स्थापित करने में पूर्णत: विफल रही है। सरकार का एकमात्र लक्ष्य प्रधानमंत्री के पूंजिपति मित्रों को लाभान्वित करने का है। प्रदेश का प्रशासनिक तंत्र बस इसी काम को बेहद कुशलता से कर रहा है। बाकि आम नागरिक तो पुलिस पिटाई में थानों में दम तोड रहा है। इस सभा को संबोधित करते हुए जिला कांग्रेस अध्यक्ष राकेश गुप्ता ने कहा कि 2023 के चुनाव में बहुमत प्राप्त करने के बाद भाजपा नेतृत्व ने प्रदेश पर एक अकुशल, अनुभवहीन और कठपुतली सरकार थोप दिया है। इस सरकार के आने के बाद प्रदेश में गुण्डातंत्र सक्रीय हो गया है। कवर्धा के बाद बलरामपुर की घटना बतलाती है कि पुलिस भी इस गुण्डातंत्र संस्कृति से अछूती नहीं रही है। इस दौरान विनय शर्मा, मो इस्लाम,हेमंत तिवारी, दुर्गेश गुप्ता, मदन जायसवाल, इरफान सिद्धकी, विरेन्द्र त्रिपाठी, विवेक सिंह, प्रमोद चौधरी, मो0 हसन, लोकेश पासवान, कलीम अंसारी, मो0 बाबर, मो काजू खान, विरेन्द्र पाठक, अविनाश कुमार,रशीद पेंटर, अमितेज सिंह, गीता रजक, चंचला सांडिल्य, उर्मीला कुशवाला, संगीता मिंज, अनुराधा सिंह, हमीदा बानो, केदार यादव, परवेज आलम गांधी, हर्ष वर्धन सिंह संजय सोनी, वसीम अंसारी, अलि सोहेल, हरीशचंद्र पैकरा, बुन्देला राम, विक्रम कुमार, राजेश दुबे, बरना, विजय किशोर उपाध्याय, बालकुँवर, दीपक आदि उपस्थित थे।

शराब पीने के लिए रुपए नहीं दिया तो कर दी पिटाई,दो गिरफ्तार

-संवाददाता-
अंबिकापुर,03 नवम्बर 2024
(घटती-घटना)। मांगने पर शराब पीने के लिए पैसा नहीं दिया तो तीन बदमाशों ने एक युवक की बेदम पिटाई कर दी। घटना 1 नवंबर की रात शहर के बाबूपारा की है। पीड़ित युवक की रिपोर्ट पर कोतवाली पुलिस ने दो आरोपी को गिरफ्तार किया है। वहीं एक आरोपी अभी भी फरार है।
मनमोहन यादव शहर के बाबूपारा का रहने वाला है। वह 1 नवंबर की रात को अपने घर के पास था तभी मोहल्ले के ही सावन, राहुल व एक अन्य युवक वहां आए और मनमोहन से शराब पीने के लिए रुपए मांगने लगे। नहीं देने पर उसके साथ मारपीट की घटना को अंजाम दिया था। वहीं बदमाशों ने उसकी बाइक को भी क्षतिग्रस्त कर दिया है। मनमोहन ने मामले की रिपोर्ट कोतवाली में दर्ज कराई थी। रिपोर्ट पर पुलिस ने आरोपी सिद्धांत उर्फ सावन (18) निवासी बाबूपारा, राहुल पैकरा (19) निवासी भाथूपारा थाना मणीपुर को गिरफ्तार किया है। वहीं एक अन्य आरोपी फरार है। पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई कर जेल दाखिल कर दिया है।

नर्सिंग की छात्रा ने चेहरे पर प्लास्टिक बांधकर की आत्महत्या

-संवाददाता-
अंबिकापुर 03 नवम्बर 2024
(घटती-घटना)। बलरामपुर जिले के ग्राम अमडीपारा की नर्सिंग की एक छात्रा ने रविवार को प्लास्टिक से पूरे चेहरे को बांध ली और दम घुटने से गंभीर हो गई। परिजन उसे इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज अस्पताल लाए। यहां जांच के दौरान चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।
राजपुर थाना क्षेत्र के ग्राम अमडीपारा निवासी 19 वर्षीय रेशमा खातून नर्सिंग की छात्रा थी। वह रविवार को अपने घर में ही थी। इस दौरान दोपहर में वह अपने चेहरे को प्लास्टिक से बांध ली थी और दम घुटने से अचेत होकर कमरे में पड़ी थी। कुछ देर बाद उसकी मां कमरे में गई तो वह अचेत पड़ी थी और प्लास्टिक चेहरा में बंधा हुआ था। वह तत्काल उसके चेहरे से प्लास्टिक हटाई और घटना की जानकारी परिजन को दी। परिजन उसे निजी वाहन से इलाज के लिए

मेडिकल कॉलेज अस्पताल लाए। यहां जांच के दौरान चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

चौपाटी में मिली महिला की लाश,पुलिस जांच में जुटी

-संवाददाता-
अंबिकापुर,03 नवम्बर 2024
(घटती-घटना)। शहर के चौपाटी में रविवार की सुबह महिला की लाश मिलने से सनसनी फैल गई है। महिला चौपाटी में ही एक बिरयानी दुकान में रहकर काम करती थी। सूचना पर कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंचकर मामले की जांच की। महिला के सिर व पैर में चोट के निशान भी पाए गए हैं। वहीं महिला पूर्व से मिर्गी बीमारी से पीड़ित थी। पुलिस को मानना है कि संभवतः महिला शनिवार की देर रात दुकान के अंदर मिर्गी आने से गिर गई होगी और उसकी मौत हो गई। फिलहाल पुलिस मामले में मर्ग कायम कर आगे की कार्रवाई के लिए पीएम रिपोर्ट का इंतजार कर रही है।

सूरजपुर जिले के धरमपुर निवासी 35 वर्षीय सुनीता बरगाह अंबिकापुर स्थित चौपाटी में सरगुजा बिरयानी दुकान में रहकर काम करती थी। दुकान संचालक मुकेश कश्यप ने बताया कि महिला रात में दुकान के अंदर ही रहती थी। रविवार की सुबह संचालक का पिता दुकान पहुंचा तो महिला मृत पड़ी थी। वह अन्य लोगों की मदद से उसके शव को दुकान से बाहर कर दिया और घटना की जानकारी कोतवाली पुलिस को दी। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंचकर मामले की जांच की। पुलिस महिला के पिता को बुलाकर व दुकान संचालक का बयान दर्ज किया है। वह पूर्व से मिर्गी बीमारी से पीड़ित थी। पुलिस का मानना है कि दुकान के अंदर महिला को मिर्गी बीमारी आया होगा इससे गिरने से उसकी मौत हुई होगी। उसके सिर व पैर में चोट के निशान है। गिरने से चोट लगने की बात कही जा रही है। फिलहाल पुलिस मामले में मर्ग कायम कर आगे की कार्रवाई के लिए पीएम रिपोर्ट का इंतजार कर रही है।

गांजे की तस्करी करते पति-पत्नी गिरफ्तार

-संवाददाता-
अंबिकापुर,03 नवम्बर 2024
(घटती-घटना)। सीतापुर पुलिस ने 5 किलो 8 सौ ग्राम गांजा के साथ पति-पत्नी को गिरफ्तार किया है। जब्त गांजे की कीमत 60 हजार रुपए बताई जा रही है। पुलिस ने दोनों के खिलाफ कार्रवाई कर जेल दाखिल कर दिया है।

जानकारी अनुसार पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली थी कि बस में सफर कर रहे एक दंपती के पास भारी मात्रा में मादक पदार्थ गांजा है। जिसे वो अपने क्षेत्र में अवैध रूप से खपाने ले जा रहे हैं। मुखबिर की सूचना के बाद पुलिस सक्रिय हो गई और सुर चौक के पास घेराबंदी कर बस का इंतजार करने लगी। इसी दौरान रायगढ़ से सासाराम जाने वाली सिंह बस सुर चौक पहुंची जिसे पुलिस ने रोका और बस की तलाशी लेने लगी। तलाशी के दौरान पुलिस को बस में सवार एक दंपती पर शंका हुई। इसके आधार पर उन्हें नीचे उतारकर पुलिस पूछताछ करने लगी। पूछताछ के दौरान उन्होंने अपना नाम संजय नाई एवं कृष्णा कुमारी निवासी अमलभिट्ठी दरिमा बताया। पुलिस ने जब उनके पास रखे बैग की तलाशी ली तो उसमें बड़ी मात्रा में रखा गांजा पुलिस के हाथ लग गया। इसका वजन 5 किलो 880 ग्राम एवं बाजार भाव 60 हजार रुपए बताया जा रहा है। इस मामले में पुलिस ने पति-पत्नी के विरुद्ध एनडीपीएस एक्ट की धारा 20(बी) के तहत अपराध दर्ज कर जेल भेज दिया है। आरोपी दंपती पत्थलगांव से गांजा खरीदकर अपने क्षेत्र में खपाने ले जा रहे थे। लेकिन पुलिस टीम ने मुखबिर की सूचना पर खपाने से पहले ही दोनों को गिरफ्तार कर गांजा बरामद कर लिया। इस कार्रवाई में थाना प्रभारी मोरध्वज देशमुख, एएसआई शामिल थे।

हवन-पूजन में समाज के लोग हुए शामिल

» कायस्थ समाज ने की भगवान चित्रगुप्त की पूजा-अर्चना

-संवाददाता-
अंबिकापुर,03 नवम्बर 2024
(घटती-घटना)। कायस्थ समाज द्वारा शहर के गुदरी बाजार स्थित भगवान चित्रगुप्त मंदिर में कलम-दवात की पूजा की गई। इस दौरान कई धार्मिक अनुष्ठान और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कायस्थ समाज द्वारा भगवान चित्रगुप्त की पूजा श्रद्धाभाव के साथ की गई।
शहर के गुदरी बाजार स्थित चित्रगुप्त मंदिर में रविवार की सुबह सुंदरकांड का पाठ किया गया। इसके बाद समाज के लोगों द्वारा भगवान चित्रगुप्त की पूजा-अर्चना की गई। परंपरा के अनुसार समाज द्वारा कलम-दवात की पूजा की गई। पूजन के बाद सामूहिक हवन का आयोजन किया गया। हवन पूजन

के पश्चात प्रसाद वितरण किया गया। इस दौरान कायस्थ समाज के अनिल सिन्हा, अरविन्द सिन्हा, हेमंत सिन्हा, जेपी श्रीवास्तव, वीके वर्मा, विरेंद वर्मा, आरके खरे, क्रिनेश सिन्हा, अखिलेश सिन्हा, दिलीप वार्मा, शांति सिन्हा, विमला सिन्हा, प्रभात रंजन सहित काफी संख्या में कायस्थ समाज के लोग उपस्थित थे।

शराब भट्ठी के पास विवाद के बाद कुएं में मिली युवक की लाश

-संवाददाता-
बिश्रामपुर,03 नवम्बर 2024 (घटती-घटना)। दीपावली की रात दोस्त के साथ शराब भट्ठी पहुंचे युवक की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई है। उसकी लाश एक अनुपयोगी कुएं में मिली। मामले में पुलिस जांच में जुट गई है। सूरजपुर जिले के बिश्रामपुर थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम पंचायत करंजी निवासी 33 वर्षीय विन्सेंट आगोस लुकस पिता किशोर कुमार लुकस बिश्रामपुर आरटीआई कॉलोनी के समीप रेलवे के सब स्टेशन में ठेका कर्मी के पद पर कार्यरत था।
31 अक्टूबर की रात ड्यूटी खत्म होने पर रात 9 बजे एक मित्र के साथ वह ग्राम पंचायत शिवनंदनपुर में स्थित कंपोजिट शराब दुकान में शराब पीने आया था। देर रात तक घर नहीं लौटने पर परिजन रात से ही उसे फोन लगाकर उसकी जानकारी लेने का प्रयास कर रहे थे। लेकिन उसका फोन रिसीव नहीं होने से सुबह खोजने उसके ड्यूटी स्थल पहुंच गए। कार्यस्थल और उसके अन्य संभावित ठिकानों पर उसके नहीं मिलने पर परिजन ने बिश्रामपुर थाने पहुंचकर विन्सेंट के लापता होने की सूचना दी। इसी दौरान पुलिस को जानकारी मिली कि शराब भट्ठी के पास सडक़ किनारे एक स्कूटी और मोबाइल लावारिस हालत में पड़ा है। सूचना पर पुलिस मौके पर परिजन के साथ पहुंची और स्कूटी क्रमांक सीजी 16 सीबी 6644 व मोबाइल की तस्दीक कराई तो पता चला कि वाहन-मोबाइल विन्सेंट का ही है। इसी दौरान झाडिय़ों के बीच अनुपयोगी कुएं में डीडीआरएफ टीम के सदस्यों ने कैमरा डालकर देखा तो विन्सेंट का शव दिखा। इसके बाद शव को निकालकर जांच करने के बाद पीएम कराकर परिजन को सौंप दिया गया।

स्कॉर्पियो पलटने से 8 लोगों की मौत,सांसद और विधायक ने पहुंचकर शोक व्यक्त किया

-संवाददाता-
कुसमी/बलरामपुर,03 नवम्बर 2024
(घटती-घटना)। छत्तीसगढ़ के बलरामपुर जिले में एक दर्दनाक सड़क हादसे में 8 लोगों की मौत हो गई। यह हादसा तब हुआ जब कुसमी से राजपुर जाने वाली मुख्य मार्ग पर बुढा बगीचा के पास एक स्कॉर्पियो अनियंत्रित होकर पानी से भरी डबरी में जा पलटी। इस हादसे में एक महिला और एक बच्ची सहित सभी यात्रियों की मौत हो गई। घटना की जानकारी मिलते ही स्थानीय प्रशासन, पुलिस और जनप्रतिनिधि मौके पर पहुंचे और राहत कार्य में जुट गए। वहीं घटना की जानकारी लगते ही देर रात सामरी विधायक उद्धेश्वरी पैकरा ने राजपुर स्वास्थ्य केंद्र पहुँचकर घटना की जानकारी ली।
प्राप्त जानकारी के अनुसार घटना शनिवार की राम

लगभग 8 बजे की है। लरिमा कुसमी निवासी 35 वर्षीय चंद्रावती पति संजय मुंडा जो की सूरजपुर जिला में शिक्षक के पद पर पदस्थ थी। दीपावली की त्यौहार मनाने अपने घर आई थी। दीपावली त्यौहार के बाद चंद्रावती अपनी ड्यूटी पर वापस सूरजपुर जा रही थी। चंद्रावती मुंडा के साथ वाहन में उसके पति संजय मुंडा 33 वर्ष एवं 6 वर्षीय पुत्री कीर्ति सहित गाँव के चार अन्य लोग सवार थे। वाहन जैसे ही कुसमी से राजपुर मुख्य मार्ग में राजपुर से 3 किलोमीटर पहले लडुआ के पास पहुँची।
वाहन के तेज रफ्तार होने के कारण चालक का वाहन पर से नियंत्रण हट गया तथा वाहन सड़क के दूसरी ओर पानी से भरी डबरी में जा पलटी। घटना में वाहन पलट कर पानी मे पूरी तरह से डूब गया जिससे वाहन को बंद हो जाने से स्कार्पियो वाहन का सभी दरवाजे लॉक हो गया। जिससे उसमे बैठे सभी यात्री फँस गए। घटना के बाद स्थानीय लोगो ने उसमे बैठे यात्रियों को बचाने की कोशिश की परंतु वाहन में सभी दरवाजो का शीशा बंद था केवल चालक के तरफ का दरवाजे के शीशा खुला था जिसके बाद स्थानीय लोगो की मदद से किसी तरह वाहन के खिड़की से चालक को खींचकर बाहर निकाला गया,
वहीँ सूचना मिलते ही राजपुर पुलिस तत्काल घटना स्थल पर पहुँची। परंतु वाहन के पानी मे पुरी तरह से डूबे होने के कारण रेस्क्यू करने के लिए जेसीबी मँगाया गया।जेसीबी की सहायता से वाहन को डबरी से काफी मशक्कत के बाद निकाला गया। जब वाहन को बाहर निकाला गया तो उसमें बैठे सभी लोग मृत पाए गए, जिसके बाद पुलिस ने सभी मृतकों के शव को राजपुर स्वास्थ्य केंद्र भेज दिया।

घटना में माता पिता पुत्री सहित आठ लोगों की मौत

कुसमी विकासखंड अंतर्गत ग्राम पंचायत लरीमा निवासी चंद्रावती मुंडा पति संजय मुंडा 35 वर्ष, संजय मुंडा पिता वासुदेव 33 वर्ष कीर्ति मुंडा पिता संजय मुंडा 6 वर्ष सहित गाँव के अन्य चार लोग जिसमे उदय नाथ 27 वर्ष, मंगल दास 21 वर्ष, भूपेंद्र मुंडा 18 वर्ष व अवनीत राम प्रजापति 17 वर्ष थे। ये सभी स्कार्पियो क्रमांक सीजी 15 डीपी 6255 में सवार होकर लरिमा से सूरजपुर जा रहे थे। जैसे ही वे ग्राम बुढाबग़ीचा लडुआ पहुँचे तभी वाहन चला रहे चालक करकली निवासी मुकेश दास 26 वर्ष वाहन पर से अपना नियंत्रण खो दिया। जिसके बाद वाहन सड़क के दूसरी तरफ़ एक पानी से भरी डबरी में जा गिरी और पलट गया। इस घटना में चंद्रवती उसके पति संजय सहित 6 वर्षीय पुत्री कीर्ति सहित उसमे सवार सभी लोगों की मौके पर ही मौत हो गई जबकि चालक का अम्बिकापुर ले जाते समय रास्ते में मौत हो गया।

बद्तर होते जा रही है प्रदेश की कानून व्यवस्था

» मुख्यमंत्री,गृहमंत्री को पद से हटाने की उठी मांग...

रायपुर,03 नवम्बर 2024(ए)। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि प्रदेश की कानून व्यवस्था बद से बद्तर होते जा रही है। दीपावली के तीन दिनों में राजधानी रायपुर में 7 हत्यायें हुई है। राजधानी से लगे भिलाई, दुर्ग जिले में 4 हत्यायें हुई है। तीन से चार दिनों में राजधानी क्षेत्र में रायपुर भिलाई में कुल 11 हत्यायें हुई है। जब देश का सबसे बड़ा त्योहार हो तब यह उम्मीद की जाती है, सरकार और पुलिस कानून व्यवस्था को बनाये रखने के लिये अतिरिक्त सतर्कता बरतेगी। ऐसे समय चार दिनों में 11 हत्यायें होना राज्य की बिगड़ती कानून व्यवस्था पर बड़ा सवाल खड़ा करता है।

बिहार,यूपी जैसे हालात हो गई है प्रदेश की

दीपक बैज ने कहा कि छत्तीसगढ़ की स्थिति तो बिहार, यूपी से भी ज्यादा डरावनी हो गयी है। यह सरकार छत्तीसगढ़ को मणीपुर बनाने पर तुली है। प्रदेश में पहली बार हो रहा कि जातीय आधार पर संघर्ष हो रहा है। राजधानी के सकरी गांव में दंगा हो गया, एक घर में आग लगा दिया गया, वाहनों को जला दिया गया, यदि परिवार वाले गांव छोड़कर नहीं जाते 11 सदस्य का पूरा परिवार घर में जिंदा जल गया होता।

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा...कि अब तो धर्मस्थल भी नहीं है सुरक्षित...

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि प्रदेश में अब धार्मिक स्थल भी सुरक्षित नहीं हैं। दामाखेड़ा, जो कबीर पंथ का दुनिया का सबसे बड़ा तीर्थ स्थान माना जाता है। दामाखेड़ा आश्रम के बाहरी इलाके में 50-60 लोग पहुंचे और आश्रम परिसर में आग लगाने का प्रयास किया। उपद्रवियों ने आश्रम के मुख्य द्वार के पास जलता हुआ बम फेंका, जिससे आग लग गई और परिसर में अफरा-तफरी मच गई। इसके बाद उपद्रवियों ने पत्थरबाजी भी शुरू कर दी, जिसमें आश्रम में मौजूद कई लोगों को चोटें आई। आश्रम के उदित मुनि साहब को टारगेट कर हमला किया गया। अब धार्मिक स्थल सुरक्षित नहीं है तो आम आदमी की स्थिति का अंदाजा लगाया जा सकता है।
प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष दीपक बैज ने कहा कि हम मांग करते है कि ऐसी सरकार को जो लोगों के जान माल की रक्षा नहीं कर पा रही, उस सरकार के मुखिया और गृहमंत्री को तत्काल पद से हटाया जाये। इस पत्रकारवार्ता में प्रमुख रूप से संचार विभाग के अध्यक्ष सुशील आनंद शुक्ला, प्रवक्ता सत्य प्रकाश सिंह भी उपस्थित थे।

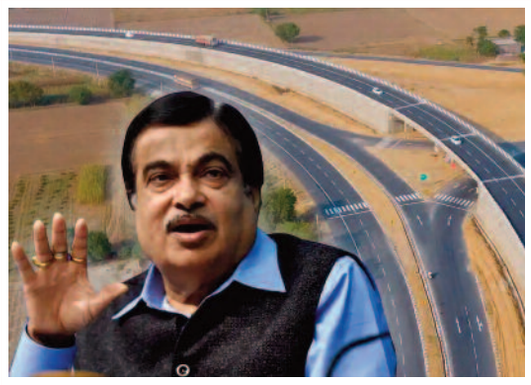

आगामी भारतीय कांग्रेस सड़क अधिवेशन कार्यक्रम में शामिल होंगे नितिन गड़करी

रायपुर,03 नवम्बर 2024(ए)। देश के सड़क परिवहन मंत्री नितिन गड़करी रायपुर आ रहे हैं। दरअसल प्रदेश में पहली बार भारतीय सड़क कांग्रेस का 83 वां वार्षिक अधिवेशन होने जा रहा है। रायपुर शहर इस कॉन्फ्रेंस की मेजबानी करेगा। ये कार्यक्रम 8 नवम्बर से 11 नवम्बर तक शहर के साइंस कॉलेज ग्राउंड में होगा। भारत की हर मेट्रो सिटी के बड़े डेवलपर्स इस कार्यक्रम में शामिल होंगे। इसके अलावा श्रीलंका, बांग्लादेश, ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया, सिंगापुर जैसे देशों के कंस्ट्रक्शन एक्सपर्ट और वैज्ञानिक भी यहां होंगे। 4 दिनों तक चलने वाले इस अधिवेशन में रोड कंस्ट्रक्शन से जुड़ी नई तकनीक पर चर्चा होगी। ये भी तय होगा कि आगे आने वाले दिनों में भारत और छत्तीसगढ़ में किस तकनीक से अधिक टिकाऊ सड़कें बनाई जा सकती हैं। उप मुख्यमंत्री अरुण साव ने कहा कि देशभर से 3000 प्रतिनिधि इस अधिवेशन में शामिल होने रायपुर आ रहे हैं। दुनिया में निर्माण के क्षेत्र में जो नई टेक्नोलॉजी आ रही है, जो नए प्रयोग हो रहे हैं उन सबकी चर्चा यहां पर होगी। हमने निर्धारित किया है कि छत्तीसगढ़ की कला संस्कृति सभ्यता से पूरे देश के लोगों को परिचित करा सकें। छत्तीसगढ़ की संस्कृति, खनिज, पर्यटन, वन, की ताकत को भी हम वहां प्रदर्शित करने वाले हैं । देश के सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गड़करी यहां उद्घाटन समारोह में शामिल होंगे।

हाथियों की मौत के मामले पर सुनवाई आज

बिलासपुर,03 नवम्बर 2024 (ए)। रायगढ़ जिले के घरघोड़ा इलाके में तीन हाथियों की करंट से हुई मौत के मामले पर हाईकोर्ट ने स्वतः संज्ञान लिया है। चीफ जस्टिस रमेश सिन्हा की डिवीजन बेंच ने इस घटना को जनहित याचिका के रूप में स्वीकार करते हुए सोमवार 4 नवंबर को इस पर सुनवाई निर्धारित की है।रायगढ़ के चुहकीमार गांव स्थित वन विभाग की नर्सरी में नीचे लटकी बिजली की तारों के संपर्क में आने से तीन हाथियों की मौत हो गई थी। अखबारों में प्रकाशित खबर के आधार पर हाईकोर्ट ने संज्ञान लिया। इस जनहित याचिका में राज्य के ऊर्जा सचिव, छत्तीसगढ़ राज्य विद्युत पारेषण कंपनी के प्रबंध निदेशक और प्रधान मुख्य वन संरक्षक को पक्षकार बनाया गया है। इस घटना के कुछ दिनों बाद अचानकमार वन क्षेत्र में भी एक हाथी करंट के कारण मारा गया। बताया गया है कि शिकारियों ने जमीन पर करंट बिछाकर इस घटना को अंजाम दिया।

हिंदू राष्ट्र पर पंडित धीरेंद्र शास्त्री का बड़ा बयान

» बोले...वे गजवा ए हिंद मांगते हैं हमने भगवा ए हिंद मांग लिया...

रायपुर,03 नवम्बर 2024(ए)। बागेश्वर धाम के पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने छत्तीसगढ़ में एक बार फिर बड़ा बयान दिया है। इस दौरान उन्होंने मीडिया से बात करते हुए कई मुद्दों पर जवाब दिया है। भारत को एक हिन्दू राष्ट्र बनाने की मांग पर पंडित धीरेन्द्र शास्त्री ने कहा की वह गजवा ए हिंद मांगते हैं हमने भगवा ए हिंद मांग लिया है । हमने कुछ गलत नही मांगा है ।
हीं हिंदुओं पर लगातार हो रही बयानबाजी पर पंडित धीरेन्द्र शास्त्री ने कहा की हिंदू अगर आपस में बटेंगे तो फूटकर फूटकर कटेंगे । अगर सभी अलग अलग चलेंगे तो आसानी से टूट जाएंगे, लेकिन अगर हिंदू एक साथ रहेंगे तो गैर सनातनी हिंदुओं को तोड़ नहीं पाएंगे । भारत को एक हिन्दू राष्ट्र बनाने की मांग पर पंडित धीरेन्द्र शास्त्री ने कहा की वह गजवा ए हिंद मांगते हैं हमने भगवा ए हिंद मांग लिया है । तो हमने कुछ गलत नही मांगा है । धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने कहा कि तुम मेरा साथ दो मैं हिंदू राष्ट्र दूंगा।
हीं पदयात्रा को लेकर पंडित धीरेन्द्र शास्त्री ने कहा कि जात-पात, भेदभाव को मिटाने एक पदयात्रा होगी जो की बागेश्वर धाम से 21 से 29 नवंबर तक होगी और इसका उद्देश्य भारत को एक करना होगा । हमे देश से जात-पात के भेदभाव को जड़ से मिटाना है । भारत को भव्य बनाना है क्योंकि अब करो या मरो की बारी है ।
इसके अलावा प्रयागराज महाकुंभ में दुकान अलॉटमेंट को लेकर साधुओं की मांग पर पंडित धीरेन्द्र शास्त्री ने कहा कि जो लोग सनातन परंपरा को नहीं जानते, वह संतों का क्या सम्मान करेंगे? थूक कांड, पंडालों में आग जैसी प्रायोजित घटनाओं से पता चलता है कि ऐसे लोग एंटी सनातनी है, उन्हें सनातन से दिक्कत है । इसलिए जिन्हें सनातन से दिक्कत है उनका वहां महाकुंभ में क्या काम है ।

वहीं दिवाली में फटाखा नहीं फोड़ने का ज्ञान देने वालों को जवाब देते हुए धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने कहा कि पटाखा नहीं फोड़ने का नियम सबके लिए होना चाहिए, 1 जनवरी, क्रिशमस, ईद बकरीद और फिल्म के रिलीज होने पर पटाखा क्यों फोड़ते हैं, हमने दिवाली में पटाखा फोड़कर सबको ठिकाने लगा दिया। बागेश्वर धाम सरकार पंडित धीरेन्द्र शास्त्री इस समय छत्तीसगढ़ पर है। इस दौरान उन्होंने आज गृहमंत्री विजय शर्मा के निवास पहुंचे। गृहमंत्री विजय शर्मा और उनके परिवार ने पंडित धीरेंद्र शास्त्री का स्वागत कर आशीर्वाद लिया। पंडित धीरेन्द्र शास्त्री कवर्धा और कांकेर में आयोजित कार्यक्रम में भाग लेने पहुंचे हैं।

बागेश्वर बाबा धीरेन्द्र शास्त्री से मिले किरण सिंहदेव,आशीर्वाद लिया

बागेश्वर बाबा धीरेन्द्र शास्त्री से किरण सिंहदेव ने आशीर्वाद लिया. बीजेपी अध्यक्ष ने एक्स पर बताया कि उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा के निवास में गत रात्रि बागेश्वर बाबा पंडित धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री जी का दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया. साथ ही उन्हें बस्तर आगमन हेतु निमंत्रण दिया. बाबा बागेश्वर हेलीकॉप्टर से कवर्धा पहुंचे. वे सुबह 10 बजे हेलीकॉप्टर से कवर्धा के न्यू पुलिस लाइन हेलीपैड पर पहुंचे. उसके बाद वहां से ग्राम राम्हेपुर के लिए रवाना हुए. उसके बाद वह आगे के कार्यक्रम में शामिल हुए. बता दें कि कवर्धा के बाद बाबा बागेश्वर महाराज का कांकेर जाएंगे. बाबा कवर्धा से कांकेर तक हेलीकॉप्टर से जाएंगे. बाबा पहाड़ी वाली भुवनेश्वरी मंदिर में पूजा अर्चना करेंगे. उसके बाद वह कांकेर में विश्राम करेंगे. अगले दिन चार नवंबर को बाबा बागेश्वर रायपुर जाएंगे.

बेचैन होकर हमले कर रहे हैं नक्सली

» साप्ताहिक बाजार की सुरक्षा में लगे जवानों पर हुए अटैक को लेकर बोले डेप्युटी सीएम अरुण साव

रायपुर,03 नवम्बर 2024(ए)। छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री अरुण साव ने रविवार को कहा कि बस्तर को नक्सल मुक्त बनाने के लिए भाजपा की डबल इंजन सरकार के प्रयासों से नक्सली बेचैन हो गए हैं और दहशत में आकर हमले कर रहे हैं। उनकी यह टिप्पणी सुकमा में आज हुए नक्सली हमले में दो जवानों के घायल होने के बाद आई है।छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री साव ने कहा कि जब से राज्य में हमारी सरकार बनी है तब से यह डबल इंजन सरकार बस्तर को नक्सल मुक्त बनाने की दिशा में दोगुनी गति से काम कर रही है। जिस तरह से नक्सलियों को गिरफ्तार किया गया है, मारा गया है और आत्मसमर्पण कराया गया है। उससे नक्सली बेचैन हैं। घबराए हुए हैं और इसलिए वे दहशत में इस तरह के हमले कर रहे हैं।

सुरक्षाबलों के बुलंद है हौसले

डेप्युटी सीएम ने कहा कि हमारे सुरक्षा बलों का मनोबल बहुत ऊंचा है और निश्चित रूप से आने वाले समय में बस्तर में शांति होगी और बस्तर विकास की ओर आगे बढ़ेगा। पुलिस ने बताया कि रविवार सुबह जगरगुंडा पुलिस स्टेशन के दो जवान सुकमा में साप्ताहिक बाजार के दौरान नक्सली हमले में घायल हो गए।

नक्सली हमले में घायल जवानों को एयरलिफ्ट कर लाया गया रायपुर

छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में नक्सलियों का आतंक लगातार जारी है। इसी कड़ी में सुकमा जिले के जगरगुंडा साप्ताहिक बाजार में आज नक्सलियों ने सुरक्षा ड्यूटी पर तैनात जवानों पर हमला किया। नक्सली हमले में घायल जवानों में से एक की हालत गंभीर बताई जा रही है, और उन्हें तत्काल चिकित्सा सहायता के लिए जगरगुंडा अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अस्पताल में प्राथमिक उपचार के बाद घायल जवानों को बेहतर इलाज के लिए रायपुर के निजी अस्पताल में हेलिकाप्टर से लाया गया है। जानकारी के अनुसार, यह हमला नक्सलियों की स्मॉल एक्शन टीम द्वारा किया गया, जिसमें दो जवान घायल हो गए। बताया जा रहा है कि हमले के बाद नक्सली जवानों के हथियार भी लूट ले गए। हमले के बाद बाजार में अफरातफरी का माहौल बन गया। घटना के बाद दहशत में आए स्थानीय लोग बाजार से भागने लगे। नक्सली हमले की सूचना मिलने के बाद पुलिस ने क्षेत्र में सर्चिंग अभियान तेज कर दिया है। सुकमा पुलिस अधीक्षक ने बताया कि हमले की जांच की जा रही है और हमलावर नक्सलियों की पहचान करने के लिए सुरक्षा बलों द्वारा सर्च ऑपरेशन चलाया जा रहा है। नक्सली हमले में घायल हुए जवानों के नाम करतम देवा और सोढ़ी कन्ना हैं। घायल जवानों को बेहतर इलाज के लिए एयरलिफ्ट कर रायपुर लाया गया। यहां नारायणा अस्पताल में दोनों जवानों को भर्ती किया गया है।

राजधानी में हत्या की वारदातों को लेकर गंभीर हुए एसएसपी

» टीआई को किया लाइन अटैच, लगाया ये आरोप

रायपुर,03 नवम्बर 2024(ए)। बीते 3-4 दिनों में रायपुर जिले में हत्या की 7 वारदातों से पुलिस की जमकर किरकिरी हुई है। लगातार हो रही घटनाओं से को एसएसपी ने गंभीरता से लेते हुए अपने मातहतों पर कार्रवाई शुरू कर दी है। इसी कड़ी में उन्होंने तिल्दा टीआईअविनाश सिंह को लाइन अटैच कर दिया है, वहीं सत्येंद्र सिंह श्याम को यहां की जिम्मेदारी सौंपी है।अपराध विशेषज्ञों का मानना है कि थाना इलाके में होने वाली छोटी घटनाओं पर अगर पुलिस त्वरित कार्रवाई करे तो संभावित बड़ी घटनाओं पर रोक लग जाती है। मगर अधिकांशतया थानों में जवान और अधिकारी इस नसीहत को अमल में नहीं लाते और सेटिंग से अधिकांश मामलों को निपटाते हैं। राजधानी रायपुर के थाना क्षेत्रों के बारे में भी ऐसा ही कहा जाता है। यहां बीते कई महीनों से लगातार वारदातें हो रही हैं, और पुलिस इस पर अंकुश नहीं लगा पा रही है। यही वजह है कि वारदातें रुकने का नाम नहीं ले रही हैं। दिवाली के मौके पर हुई घटनाओं के बाद पुलिस विभाग में पहली गाज तिल्दा टीआई अविनाश सिंह पर गिरी है।

अपराध नियंत्रण में लापरवाही का लगा आरोप

टीआई अविनाश सिंह के नाम जारी आदेश में उल्लेख है कि उन्हें अपराध रोकने में शिथिलता बरतने के चलते लाइन अटैच किया जाता है। अब उनके स्थान पर जिला विशेष शाखा के प्रभारी सत्येंद्र सिंह श्याम को तिल्दा थाने का प्रभार सौंपा गया है।

धर्मांतरण को लेकर हुआ जमकर हंगामा

» हिंदू संगठन के कार्यकर्ताओं ने घेरा घर...

» पुलिस संदिग्धों को हिरासत में लेकर कर रही पूछताछ...

रायगढ़,03 नवम्बर 2024(ए)। शहर के मिट्ठू मुड़ा मोहल्ला में रविवार की सुबह संतोष चौहान के घर पर धर्मांतरण को लेकर विवाद खड़ा हो गया। जब कुछ महिलाओं और पुरुषों ने एक विशेष धर्म की प्रार्थना की, तो इसकी आवाज सुनने के बाद शहर हिन्दू धर्म के कार्यकर्ताओं ने नारेबाजी करते हुए घर को घेर लिया और पुलिस को सूचित किया.। सूचना मिलने पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक आकाश मरकाम सहित जुट मिल थाने की पुलिस टीम मौके पर पहुंची। पुलिस ने कुछ महिलाओं सहित दो अन्य लोगों को अपने साथ थाने लेकर गई और घर से कुछ सामान भी जब्त किया। वहीं धर्म परिवर्तन की शिकायत मिलने की जानकारी जिला भाजपा अध्यक्ष उमेश अग्रवाल को मिली, जो अपने समर्थकों के साथ तुरंत घटनास्थल पर पहुंचे। इस दौरान बटोगे तो कटोगे जैसे नारे भी लगाए गए।
धर्म परिवर्तन की शिकायत पर पहुंचे जिला भाजपा अध्यक्ष उमेश अग्रवाल और हिन्दू संगठन के अंशु टुटेजा का आरोप है कि बीते कुछ दिनों से कुछ मोहल्लों में धर्मांतरण कराने की शिकायतें मिल रही है और वो इस मामले में पुलिस को शिकायत करने के बाद दोषियों पर कड़ी कार्रवाई करने की मांग कर रहे हैं। वहीं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक आकाश मरकाम का कहना था कि शिकायत मिली है और कुछ लोगों को पुछताछ के लिए थाने में ले जाया गया है। अगर शिकायत सही पाई जाती है तो नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

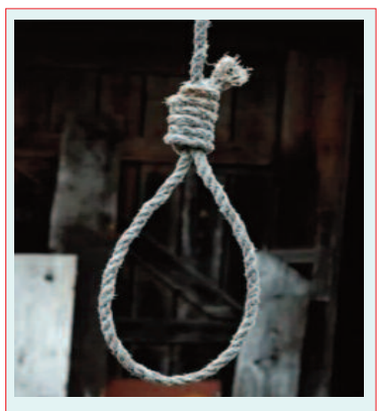

नौ वर्षीय मासूम ने की आत्महत्या

भिलाई,03 नवम्बर 2024(ए)। छत्तीसगढ़ के भिलाई में एक हैरान कर देने वाली खबर सामने आई है, यहां स्मृति नगर के ग्राम खम्हरिया में एक नौ साल की बच्ची ने शनिवार की सुबह आत्महत्या कर ली। मासूम बच्चे ची अपने भाई-बहनों के साथ घर में कैरम खेल रही थी, तभी खेल के दौरान भाई-बहन ने कुछ हेरफेर किया तो उनके बीच कुछ कहासुनी हो गई। बच्चे ची ने खेल में अपनी आपत्ति दर्ज कराई, जिसके बाद उसके भाई-बहनों ने उसे खेल से बाहर कर दिया। मासूम बच्ची ने जब इस मामले की शिकायत अपने माता-पिता से की, तो उन्होंने इसे नजरअंदाज कर दिया। इस अनदेखी से नाराज होकर बच्ची ने घर के एक कमरे में जाकर फांसी लगा ली। जब परिवार के अन्य सदस्य उसे फंदे पर लटका हुआ देखकर घबरा गए, तो तुरंत उसे उतारकर श्री शंकराचार्य मेडिकल कॉलेज ले गए, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

गाय को राज्य माता का दर्जा देने के मामले में गेंद सरकार के पाले में डाली कांग्रेस ने

सरकार विधेयक लाये, हम समर्थन देने को तैयार

रायपुर,03 नवम्बर 2024(ए)। शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती ने छत्तीसगढ़ में अपनी यह मांग दोहराई कि सरकार गाय को राजमाता का दर्जा दे। शंकराचार्य ने कहा मैं छत्तीसगढ़ के सीएम से कहना चाहूंगा कि गोवर्धन पूजा न सही आगे गोपाष्टमी आ रही है। मुख्यमंत्री को चाहिए गाय को छत्तीसगढ़ महतारी घोषित कर दें। हिन्दूओं के देश में कब तक हिन्दूओं की माता कटती रहेगी। शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती देश भर में गाय को राष्ट्र माता का दर्जा दिलाने की मुहिम चला रहे हैं। हर वर्ष छत्तीसगढ़ में दीपावली का त्यौहार मनाने के लिए पहुंचने वाले अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती ने रायपुर प्रवास पर राज्य सरकार से कहा कि सरकार गाय को राजमाता का दर्जा दे।
शंकराचार्य ने कांग्रेस नेताओं से बातचीत में बताया कि महाराष्ट्र सचमुच महा राष्ट्र हो गया है। राष्ट्र पीछे रह गया है। वहां के सीएम एकनाथ शिंदे ने ऐसा काम किया कि जो छत्रपति शिवाजी ने किया था। पहली बार एक ऐसा नेता आया है, जो हिन्दूत्व के लिए स्पष्ट विचार रखता है। उन्होंने गाय को राष्ट्र माता का दर्जा दिया है।

करे कोई भरे कोई कहावत सूरजपुर दोहरे हत्याकांड में चरितार्थ हुई

हत्या अशोक कबड्डी के बेटे ने की और उजड़ा संजय कबाड़ी का अवैध आशियाना

कार्यवाही सुबह से शाम तक चली पर पर जेसीबी व बुलडोजर की दौड़ अशोक कबाड़ी के हत्यारे कुलदीप के घर तक नहीं पहुंची ?

सोशल मीडिया पर कार्यवाही की सराहना से लेकर आलोचना तक हुई

देर शाम तक यह बात हो रही थी कि सभी टूट जाएगा पर कार्यवाही खत्म होते तक हत्यारे कुलदीप के घर तक जेसीबी का बकेट नहीं पहुंचा

सभी का कहना था हत्या करने वाला अशोक कबाड़ी का बेटा कुलदीप था पर टूटा हत्यारे के चाचा का

केवल बाउंड्री ही अवैध अतिक्रमण है या मकान भी ध्वस्त करना है ऐसा लिखा गया सोशल मीडिया में: जयंत सिंह केराम

युवा जो नशे में लिप्त होकर अपराधों को अंजाम दे रहा था आज उसके कर्मों की सजा पूरे परिवार को भोगनी पड़ी:दीपक कर

-समरोज खान-
सूरजपुर,03 नवम्बर 2024
(घटती-घटना)।

ड्यूटी पर तयनात सूरजपुर के प्रधान आरक्षक की पत्नी व बच्ची के दोहरा हत्याकांड मामला हमेशा ही याद रहने वाला मामला बन गया है, इस मामले में आरोपी के प्रति किसी की भी सहानुभूति नहीं है, सहानुभूति इस समय किसी के प्रति है तो वह प्रधान आरक्षक की पत्नी व बच्चों के मौत को लेकर है, अभी तक जो विवेचना वह कार्रवाई हो रही है वह प्रधान आरक्षक की पत्नी व बच्चों की न्याय के दिशा में हो रही है, इसी बीच कुछ ऐसी भी प्रशासनिक कार्रवाई हुई जो शायद नहीं होती पर इस समय इसलिए हो रही है क्योंकि एक तो कुख्यात आरोपी है, ऊपर से उसका अवैध कब्जा था और अवैध कब्जे के विरुद्ध प्रशासन ने भी कार्यवाही शुरू करती है, अभी तक कई ठिकानों पर कबड्डी के अवैध कब्जे को हटाया गया है, इस कब्ज़ा हटाए जाने के मामले में यदि सबसे अधिक किसी का नुकसान हुआ है तो वह कुख्यात आरोपी कुलदीप के चाचा संजय कबाड़ी को हुआ, क्योंकि उसका अवैध कब्जा ज्यादा था जिसे हटा दिया गया, इसके बाद यह बात होने लगी की करें कोई भरे कोई, पूरा कृत तो कुलदीप ने किया और उसकी सजा अब सबको मिल रही है। पर अभी तक कुलदीप के घर पर जेसीबी नहीं पहुंच सका, पर अब वन विभाग की जेसीबी कुलदीप के घर तक पहुंच सकती है वन विभाग ने नोटिस चस्पा कर कब्जा खाली करने को कहा है, कब्जा नहीं हटाए जाने पर कार्यवाही की जाएगी,बताया जा रहा है कि सूरजपुर के कब्रिस्तान मोहल्ले में वन विभाग की जमीन पर अवैध कब्जा कर घर बनाया गया था जहां पर कुलदीप के नशेड़ी साथियों का जमावड़ा हुआ करता था, सारे करतूत वहीं से होते थे अब उसे घर को तोड़ने के लिए कार्यालय वनमंडलधिकारी सूरजपुर के द्वारा 29 अक्टूबर को नोटिस जारी कर 7 दिवस के भीतर खाली करने को कहा है 7 दिवस के बाद नियम के तहत कार्रवाई की जाएगी।

संजय कबाड़ी के घर पर चलता बुलडोजर

वन विभाग का नोटिस

अब वन विभाग का चलेगा जेसीबी कुख्यात आरोपी कुलदीप के घर पर...

जिला प्रशासन के बाद अब वन विभाग अपने जमीन से कब्जा हटाने के लिए सात दिवस के बाद कुलदीप के पिता के अवैध जमीन पर बने घर को तोड़ने पहुंचेगी जिसके लिए सारी तैयारी कर ली गई है आरोपी के पिता को इसकी नोटिस जारी हो गई है जो उसके अवैध घर के सामने चश्मा भी कर दिया गया है जिसे सात दिवस के भीतर कार्यवाही कर तोड़ा जाएगा।

जैसे बनाई गई थी संपत्ति अब वैसे ही खत्म हो रही है...

जैसे अवैध कमाई कर संपत्ति अर्जित की गई थी अब वैसे ही संपत्ति जो अवैध थी भी जिसे अब खत्म करने की कार्यवाही प्रशासन द्वारा की जा रही है, अवैध कारोबार के दम पर खूब अवैध संपत्ति अर्जित कर ली गई थी, अवैध तरीके से जमीन पर कब्जा करके घर गोदाम बना लिए गए थे, जिससे अब तोड़कर प्रशासन नस्तेनाबुत कर रही है। जिस रास्ते कमाई की गई थी उसी रास्ते अब सारी कमाई पर ग्रहण लग गय, इसीलिए कहा जाता है कि ईमानदारी से कमाया गया धन रहता है, बैमानी से कमाया गया धन कभी भी आपके साथ नहीं रहता अब अवैध तरीके से कमाया गया धन जिंदा रहते ही नस्ट हो रहा है।

नगर पालिका अध्यक्ष क्या अब मृतक बेटी के नाम बनाएंगे पार्क ?

सूरजपुर नगरपालिका अध्यक्ष ने मंच से घोषणा की थी कि प्रशासन यदि अवैध अतिक्रमण हटाकर उन्हें जमीन खाली करा कर देता है तो वह मृतक बेटी के नाम एक सुंदर सा पार्क बनाएंगे और अतिक्रमण हटा दिया गया है क्या अब नगर पालिका अध्यक्ष वहां पर पार्क बनाएंगे।

गोदामो को नही बल्कि पूरे घरों पर प्रशासन का बुलडोजर चलना चाहिए...

दीपक सोशल मिडिया पर लिखा की जिला प्रशासन नगर पालिका की शानदार कार्यवाही...सुरजपुर हत्याकांड के मुख्य आरोपी कबाड़ी के अवैध ठिकानों पर चला प्रशासन का बुलडोजर...आज के वो युवा जो नशे में लिप्त होकर अपराधो को अंजाम दे रहे है उन्हें अपराध करने से पहले अपने परिवार के विषय मे सोचना चाहिए, अन्यथा उनके कुकर्मो की सजा पूरा परिवार भोगेगा...प्रशासन से मांग है कि सिर्फ गोदामो को नही बल्कि पूरे घरों पर प्रशासन का बुलडोजर चलना चाहिए।

केवल बाउंड्रीवाल ही अवैध अतिक्रमण है या मकान भी ध्वस्त करना है?

जयनाथ सिंह केराम सोशल मिडिया पर लिखा की केवल बाउंड्रीवाल ही अवैध अतिक्रमण है या मकान भी ध्वस्त करना है? सूरजपुर जिले के दोहरे हत्याकांड के मुख्यआरोपी के अवैध अतिक्रमण को हटाने की प्रशासनिक कार्यवाही निश्चित ही सराहनीय एवं जनमानस के मंशानुरूप तथा विधिक कार्यवाही है किंतु प्रशासनिक अमले के द्वारा केवल बाउंड्रीवाल को तोड़कर अतिक्रमण की कार्यवाही इतिश्री कर लेना, कई सवालों को जन्म देता है। क्या आरोपियों के मकान/बिल्डिंग को बचाने के लिए भी कोई 'खेला' हो सकता है?

जिला कांग्रेस कमिटी ने पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी की 40 वीं शहीद दिवस पर श्रद्धासुमन किया अर्पित

-संवाददाता-
कोरबा,03 नवम्बर 2024
(घटती-घटना)।

पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को उनकी 40 वीं शहीद दिवस पर प्रियदर्शनी इंदिरा स्टेडियम कोरबा के शक्ति स्थल तथा स्टेडियम परिसर में स्थापित इंदिरा प्रतिमा के समक्ष जिला कांग्रेस कमेटी कोरबा शहर द्वारा इंदिरा जी की पुण्यतिथि कार्यक्रम मनाया गया। कार्यक्रम में पार्टी के पदाधिकारी और सदस्यों ने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए इंदिरा गांधी के योगदान पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर पूर्व मंत्री जयसिंह अग्रवाल ने इंदिरा गांधी को महान नेत्री निरूपित करते हुए कहा कि वे बाल्यावस्था से ही राजनीति की ओर सक्रिय हो गई थी। उन्होने 10 वर्ष की अवस्था में अपने प्रदर्शन से लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। श्रीमती गांधी गरीबों, श्रमिकों की रक्षक, राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की अनुयायी, करुणा तथा सहिष्णुता की प्रतिमूर्ति थी।

महापौर राजकिशोर प्रसाद ने इंदिरा गांधी को नारी जगत में साहस की प्रज्वलित ज्योति बताते हुए कहा कि उन्होंने भारत को खुशहाल बनाने के लिए अपने कार्यकाल में देश को राष्ट्रीय एकता की माला में पिरोया। जिला कांग्रेस अध्यक्ष सपना चौहान ने कहा कि इंदिरा गांधी ने राष्ट्रीय प्रगति को सर्वोच्च प्राथमिकता दी और इसके अंतर्गत उल्लेखनिय परियोजनाओं पर कार्य किया। ऐसे कार्यों का लाभ देश और यहां के नागरिकों को मिल रहा है। जिला कांग्रेस अध्यक्ष सुरेन्द्र प्रताप जायसवाल ने कहा कि महिलाओं के स्वाभिमान की रक्षा के लिये श्रीमती गांधी ने प्रधानमंत्री के तौर पर विशिष्ट कार्यों को अंजाम दिया। सभापति श्याम सुंदर सोनी ने कहा कि युद्धकाल में महाकाली, रणचंडी बनकर मुकाबला करती रही, वहीं शांतिकाल में भारतवासियों की सेवा करने में वे सबसे आगे रहीं। महिला कांग्रेस अध्यक्ष कुसुम द्विवेदी ने कहा कि श्रीमती इंदिरा गांधी ने प्रधानमंत्री के रूप में भारत के लिए उस समय की परिस्थितियों के अनुरूप अनेक अहम निर्णय लिए उनकी दूरदर्शिता हमे आज भी प्रभावित करती है। प्रदेश सचिव बी एन सिंह ने कहा कि इंदिरा जी अपार साहस, निर्णय शक्ति और धैर्य की प्रतिमूर्ति थी। उनके मन में गरीबों के लिए सम्मान था जिन्होंने अपना पूरा जीवन देश से गरीबी मिटाने के लिए लगा दिया था।आयोजित कार्यक्रम में कोरबा ब्लॉक अध्यक्ष संतोष राठौर, पूर्व पार्षद महेन्द्र सिंह चौहान, अन्य पिछड़ा वर्ग जिलाध्यक्ष गजानंद साह, कुर्मी समाज के जिलाध्यक्ष आर. के वर्मा, पूर्व पार्षद डॉ. रामगोपाल कुर्रे, सीताराम चौहान, मुकेश राठौर, नारायण लाल कुर्रे, गोपाल कुर्रे, नत्थूलाल यादव, गोपाल यादव, सुनील त्रिपाठी, मो. यूनुस, अब्दुल मजीद, अविनाश बंजारे सहित बडी संख्या में कांग्रेसियों ने प्रियदर्शिनी इंदिरा जी के योगदान पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किया।

अपराधों को जन्म दे रही भाजपा सरकार:भगवती राजवाड़े

भाजपा सरकार की प्रशासनिक लापरवाही एवं बलरामपुर में पुलिस प्रताड़ना से हुई मौत के विरोध में कांग्रेसजनों ने किया एक दिवसीय धरना प्रदर्शन

-संवाददाता-
सूरजपुर,03 नवम्बर 2024
(घटती-घटना)। भाजपा सरकार में बढ़ती अराजकता, प्रशासनिक लापरवाही, पुलिसिया दमनकारी नीति एवं बलरामपुर में पुलिस अभिरक्षा में हुई मौत के विरोध में जिला कांग्रेस अध्यक्ष भगवती राजवाड़े के नेतृत्व में एक दिवसीय धरना प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान भाजपा सरकार में बढ़ती अराजकता,प्रशासनिक लापरवाही, पुलिसिया दमनकारी नीति एवं बलरामपुर में पुलिस अभिरक्षा व पुलिस प्रताड़ना से हुई मौत के विरोध में वक्ताओं ने जमकर भाजपा सरकार के खिलाफ़ विरोध प्रदर्शन किया बताया गया कि जब से भाजपा सरकार आयी है तब से छत्तीसगढ़ में अपराध बढ़ते जा रहे हैं। पहले बालोदाबाजार की घटना, कवर्धा की घटना,सूरजपुर की घटना, बलरामपुर की घटना एवं प्रदेश के समस्त जिलों व ब्लाको में हो रही आपराधिक घटनाओं को देखकर ऐसा लगता है कि भाजपा की सरकार निर्दोष जनो पर कार्यवाही करते आ रही है व दोषियों को निर्दोष साबित करने काम कर रही है प्रदेश की भाजपा सरकार अपराध को जन्म दे रही है व अपराधियों को संरक्षण देने का काम कर रही है इसी प्रकार बलरामपुर के थाने में हुई मौत की जाँच करने की माँग की गई व मृतक के परिवार को न्याय देने की माँग की गई इस दौरान पूर्व विधायक एवं संसदीय सचिव पारसनाथ राजवाड़े,जिला पंचायत उपाध्यक्ष नरेश राजवाड़े,ब्लॉक कांग्रेस अध्यक्ष अश्विनी सिंह,जिला कांग्रेस उपाध्यक्ष रामकृष्ण ओझा,उर्दू अकादमी के सदस्य इस्माइल ख़ान,जिला कांग्रेस महामंत्री मनोज डालमिया, उषा सिंह, आनंद कुँवर,मुकेश अग्रवाल, प्रदीप साहू, राजू सिंह,नूर आलम, प्रेमजीत सिंह, धर्मेन्द्र सिंह, महेन्द्र साहू, कुसुमलता राजवाड़े, विष्णु कसेरा, नीरज तायल,मधुसूधन साहू, गोपाल शर्मा, अजय अग्रवाल, देवेन्द्र मिश्रा,नरेन्द्र यादव, जाकेश राजवाड़े, विकास सिंह,नीरज तायल,विमला सिंह, दुर्गा सारथी, अविनाश यादव, एनएसयुआई के आकाश साहू,दीपक कर,विनय सिंह,तनवीर खान,रामसिंह, रूपदेव कुशवाहा, चन्दा सिंह, जमील सिद्धिकी, परमेश्वर राजवाड़े, हिमेन्द्र गुर्जर,शिवम साहू, यश साहू, विक्रान्त सिंह,संतोष सिंह,अनिल राजवाड़े, सुनीता, पार्वती, राधा,रोहन राजवाड़े,अमन रवि सहित कार्यक्रम में सूरजपुर कांग्रेस परिवार के समस्त वरिष्ठ कांग्रेस जन,सभी प्रकोष्ठ के पदाधिकारी गण एवं समस्त कार्यकर्तागण उपस्थित थे।

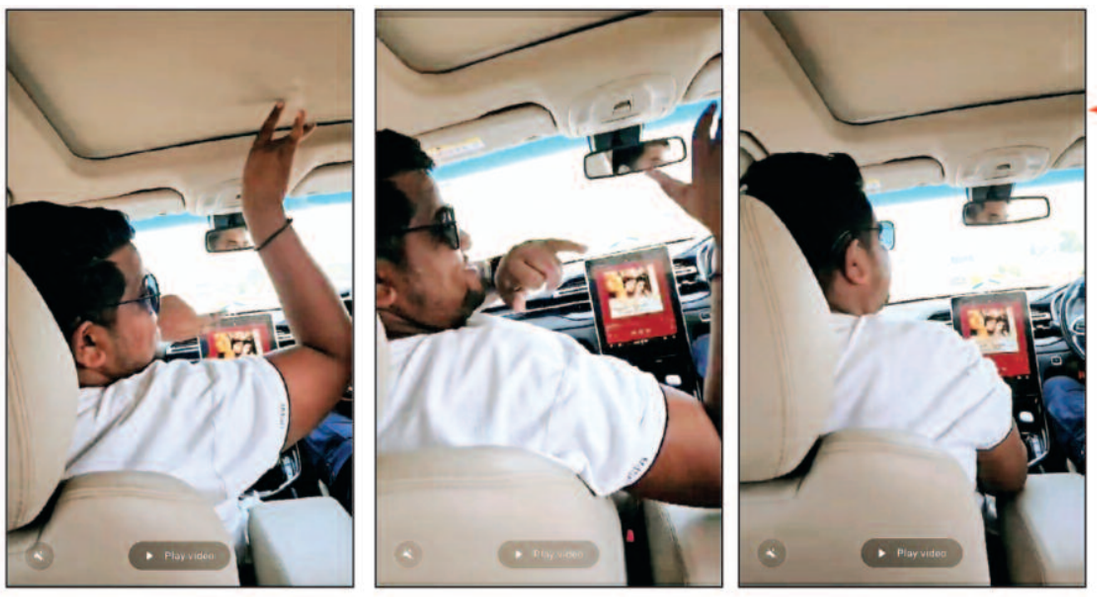

लोगों का चैन छीनकर मस्ती वाला अशफाक उल्लाह का वीडियो आया सामने

सैकड़ो लोगों को ठगने वाला अशफाक आखिर कैसे कर रहा मस्ती वीडियो में देखा जा सकता है?

अशफाक का मस्ती वाला वीडियो देख लोग अपना सर पीट रहे हैं...

लोगों को मुश्किल में डालकर अशफाक मस्ती में नजर आ रहा है...

अशफाक अपने निवेशकों को पैसा दिलाने रायपुर लेकर गया पर जब लोग वहां पहुंचे तो उसके फॉड को देखकर उनके पैरों तले जमीन खिसक गई...

अशफाक किसी कंपनी में नहीं करता था निवेश वह खुद ही था कंपनी,जब यह बात अपने निवेशकों को बताया तो उड़ गए उनके होश

अशफाक ने कहा कि हरियाणा के गुड़गांव में बहुत सारा सोना खरीद कर रखा हूं जब गुड़गांव पहुंचे निवेशक तो अशफाक रात के अंधेरे में सभी को छोड़कर भाग निकला

अशफाक उल्लाह लोगों को ठगने के बाद अपने मस्ती में मस्त और ठगे जाने वाले हुए अब पस्त

निवेशक सामूहिक शिकायत करने की बना रहे रूपरेखा, पुलिस फॉड अशफाक उल्लाह को पकड़ने में क्यों नहीं दिखा रही दिलचस्पी?

-समरोज खान-
सूरजपुर,03 नवम्बर 2024
(घटती-घटना)।

सूरजपुर जिले के शिवप्रसादनगर का 23 साल का लड़का जो सबसे बड़ा ठग साबित हुआ है, लोगों को करोड़ों रुपए का चूना लगाकर मस्ती से घूम रहा है,एक बार फिर लोगों को ठगने वाले अशफ़ाक उल्लाह का एक मस्ती करता वीडियो सामने आया है, जो अभी हाल फिलहाल का ही बताया जा रहा है, वीडियो को देखकर लोग अंदर से काफी दुखी हैं, जहां लोगों को मुसीबत में डालकर लोगों की जमा कमाई लूट कर ले जाने वाला अशफ़ाक उल्लाह मस्ती में डूबा हुआ है, जबकि इसके ऊपर दो-दो एफआईआर दर्ज है सवाल यह उठता है कि आखिर इसे इतना बड़ा संरक्षण कौन दे रहा है? जिस वजह से गिरफ्तारी नहीं हो पा रही, वही इसका मस्ती करता हुआ वीडियो लोगों को कचोट रहा है। जैसा की वीडियो में दिख रहा है कि अशफ़ाक उल्लाह एक गाने पर काफी खुश है और उस गाने को वह गा भी रहा है, उसके वीडियो को देखकर ऐसा नहीं लग रहा है कि उन लोगों की उसे चिंता है जिनका पैसा वह ठग अपना क्षेत्र छोड़कर भागा फिर रहा है। अशफ़ाक उल्लाह छत्तीसगढ़ के कई जिले सहित आसपास के पड़ोसी राज्य के लोगों को भी ठग चुका है अपने गांव के ही कई लोगों के करोड़ों रुपए ठगने के बाद भी उसका मन नही भरा, ठगे जाने वाले लोग काफी दबाव बनाएं तब जाकर अशफ़ाक उल्लाह तीन-चार गाड़ियों से लेकर लोगों को गुड़गांव गया जहां जाते समय ही वह मस्ती करता दिखा जो वीडियो इस समय वायरल हो रहा है वह अभी हाल फिलहाल का ही वीडियो है जो रायपुर जाते समय रास्ते में बनाया गया था।

क्या अप्रिय घटना का इंतजार कर रही पुलिस?

सूत्रों की माने तो कोई भी अप्रिय घटना कभी भी घट सकती है क्योंकि जिनका पैसा लेकर अशफाक नहीं लौटा रहा है वह काफी क्रोधित है और कुछ भी करने की स्थिति में आ गए हैं, अशफाक के लिए भी अब सुरक्षित रहना कठिन हो गया है तो वही ठगी के शिकार हुए लोग अब यह भी बोलते चल रहे हैं कि लगता है कि उंगली टेढ़ी करनी पड़ेगी अब उंगली कैसे वह टेढ़ी करेंगे और क्या कोई वह अराजक स्थिति उत्पन्न करेंगे यह तो वही जाने लेकिन अब स्थिति बिगड़ने की संभावना ज्यादा है। , अशफाक को लेकर जिनका पैसा करोड़ों में डूबा हुआ है वह काफी आक्रोशित है और वह किसी भी अप्रिय घटना को अंजाम दे सकते हैं ऐसा अब आभास लगने लगा है पर क्या पुलिस को ऐसा आभास नहीं हो रहा है।

असफाक के पिता ने खुद को मामले में बना लिया है अनजान,पहले वही था अपने पुत्र का सलाहकार

पूरे मामले में ठगी के असफाक उल्लाह के पिता को अब काफी शातिर दिमाग वाला माना जा रहा है। पहले अपने पुत्र को लेकर वह उसका सलाहकार था और उसके लिए ढाल भी था लेकिन अब वह खुद को मामले से अलग कर चुका है और सार्वजनिक जगह पर लोगों के सामने असफाक को डांटना और फटकारना उसने एक षड्यंत्र की तरह जारी कर दिया है जिससे उसके प्रति लोगों का ध्यान न जाए और वह मामले में खुद को बरी कर ले जाए और वह आराम से घर पर रह सके और अपना व्यापार और अपना अन्य कारोबार सम्हाल सके। वैसे बताया जा रहा है कि यह पूर्व की ही पिता पुत्र की योजना थी कि जब ठगी का भांडा फूटेगा तब पिता पुत्र पर नाराज होगा और फिर वह आराम से अपने घर पर रहकर निवेश वाले बचे पैसे से व्यापार करेगा और असफाक घूम फिरकर दिन काटेगा कुछ समय तक जब तक मामला ठंडा न पड़ जाए। वैसे पिता पुत्र के इस षड्यंत्र में लोग फंस भी चुके हैं और पिता को लेकर लोग आक्रोशित नहीं हैं न ही नाराज हैं जबकि व्यापार ठगी का पिता के ही देखरेख में मार्गदर्शन में करता था असफाक यह सूत्रों का दावा है और बताया जा रहा है कि अशफाक के पिता का ही यह पूरा दिमाग था ठगी का असफाक केवल एक मोहरा था पिता के लिए।

पैसा कहां निवेश करता था यह जानने के लिए अशफाक को लेकर निवेशक रायपुर गए,वहां जाकर जो पता चला उसे सुनकर लोगों के पैर तले से जमीन खिसक गई...

विशेष सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार अशफाक उल्लाह जिन निवेशकों का करोड़ों रुपए लेकर पैसा लौटाने का समय पर समय दे रहा है, उस समय की सीमा समाप्त होने के बाद निवेशकों ने अशफाक को पकड़ कर खूब लताड़ा, इसके बाद निवेशकों ने कहा कि तू कहां पैसा लगता था वहां लेकर चल, तब अशफाक सभी को बताया कि रायपुर में पैसा लगता था और सभी को रायपुर लेकर गया, एक-दो दिन तक टालमटोल करता रहा फिर जब उसके पिता उसे दो-तीन झापड़ लगाए और गाली गलौज किया तब उसने बताया कि मैं कहीं भी पैसा नहीं लगता था, किसी भी कंपनी में पैसा नहीं लगता था मैं खुद ही कंपनी था, यह सुनकर निवेशकों के पैरों तले जमीन खिसक गई, अब उन लोगों को लग रहा है कि अब तो पैसा और नहीं मिलेगा। निवेशकों को यह बात का बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था की अशफाक इतना बड़ा फ्रॉड निकलेगा और जिस हिसाब से उसने लोगों से पैसा लिया है, तो लोगों को भी लगा था कि पैसा कहीं ना कहीं वह निवेश किया होगा पर जब यह बात पता चली तो वह भी जानकर मूर्छित हो गए कि वह खुद ही पैसा रखता था ओर जो ऐशो आराम में वह उड़ाता था।

फिर अशफाक ने एक और झूठ बोला कहा कि सोना खरीद के गुड़गांव में रखा हूं...

अशफ़ाक उल्लाह जिन निवेशको को रायपुर लेकर गया था,उनके गाली गलौज करने के बाद व उसके पिता की डांट फटकार करने के बाद एक और बड़ा झूठ बोला कि मैं बहुत सारा सोना गुड़गांव में खरीद कर रखा हूं, उसे लेकर आता हूं और सब का पैसा दे दूंगा सभी को वह गुड़गांव लेकर गया, खाना पीना सब खिलाया उसके बाद बोला कि अभी रात हो गया है सुबह चलकर सोना ले लेंगे और उसे बेचकर सभी का पैसा दे देंगे, सभी को लगा कि चलो अब पैसा मिल जाएगा वही 1:00 बजे रात में ही अशफाक बिना बताए सभी को छोड़कर चल दिया, लोग उसे खोजते रह गए और वह नहीं आया। तब निवेशक उसके पिता को लेकर वापस आए और उसे वाड्राफनगर में छोड़ दिए और फिर वह भी वापस घर आ गए और इतना 7-8 दिन घूमने के बाद उनके हाथ कुछ नहीं आया सिर्फ उन्हें पता चला तो उसके फ्रॉड करने की मनसा, वह कहीं भी किसी भी कंपनी में पैसा नहीं लगाता था यह बात अब साफ हो गई।

अब सामूहिक शिकायत करने की तैयारी

अशफाक उल्लाह काफी लोगों का पैसा लेकर उन्हें लौटा नहीं रहा अब लोग यह भी जान चुके हैं कि यह कहीं पर भी निवेश नहीं करता था यह खुद में ही पैसे को लगाता था इसके बाद अब लोग सामूहिक रूप से शिकायत करने की रूपरेखा बना रहे हैं बहुत जल्द ही सामूहिक रूप से अशफाक व उसके पिता के विरुद्ध शिकायत करने की तैयारी हो रही है।

अशफाक ने सभी लोगों को झूठ बोलकर ठगा

अशफ़ाक उल्लाह अदानी जैसी कंपनी में निवेश करने सहित शेयर मार्केट में पैसा लगाने की बात कह कर लोगों को अच्छा खासा ब्याज देने का प्रलोभन देकर करोड़ों रुपए ठग लिया, अब जब लोग ठगी का शिकार हो गए तब जाकर यह बात पता चला कि वह कहीं पर भी पैसा नहीं लगाता था वह सारा पैसा अपने पास ही लगाता था रखता था ,कोई कंपनी नहीं थी जिसमें वह पैसा लगाता था वह खुद ही कंपनी बनाकर लोगों को ठग रहा था ऐसा उस व्यक्ति का कहना है जो उसके साथ गुड़गांव गया हुआ था।

क्या अशफाक उल्लाह को पकड़ने में पुलिस की दिलचस्पी नहीं?

असफाक उल्लाह जिस प्रकार से निश्चिंत होकर घूम रहा है उससे तो यही प्रतीत होता है कि पुलिस की दिलचस्पी अशफाक को पकड़ने में बिल्कुल भी नहीं है या फिर अशफाक को किसी बड़े नेता का संरक्षण है जिस वजह से पुलिस उसे पकड़ने से कतरा रही है। आखिर पुलिस की ऐसी कौन सी मजबूरी है की फ्रॉड अशफ़ाक को पकड़ने के लिए वह मुहूर्त देख रही है या फिर पकड़ना नहीं चाहती है,वैसे बताना जरूरी है कि असफाक उल्लाह से अब लोगों का पैसा निकलना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है जो पैसा लोगों से उसने लिया वह अपनी अय्याशी पर उसने खर्च कर दिया अब वह पैसा लौटा पाएगा यह संभव नहीं।

एसएसपी प्रशांत कुमार ठाकुर लगातार कर रहे थाना-चौकी का निरीक्षण

प्रत्येक कार्यवाहियों को निष्पक्षता से करने थाना-चौकी प्रभारियों को दिए निर्देश,एसएसपी ने आम नागरिकों से क्षेत्र की पुलिसिंग का लिया फिडबेक

-संवाददाता-
सूरजपुर,03 नवम्बर 2024
(घटती-घटना)।

थाना-चौकी क्षेत्र की पुलिसिंग, कार्यवाही में पारदर्शिता एवं बल की सजगता के आंकलन करने के साथ ही थाना-चौकी की कार्यप्रणाली को परखने, आमजनता के समस्याओं का त्वरित निराकरण कराने एवं क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति का जायजा लेने वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सूरजपुर श्री प्रशांत कुमार ठाकुर रविवार, 03 नवम्बर 2024 को थाना प्रेमनगर, चौकी तारा एवं उमेश्वरपुर पहुंचे तथा किए जा रहे पुलिसिंग के बारे में ग्रामीणों से फिडबेक लिए।

एसएसपी प्रशांत कुमार ठाकुर ने सर्वप्रथम इन थाना-चौकी भवन जायजा लिया और क्षेत्र में किए जा रहे पुलिसिंग के वाकिफ हुए। उन्होंने प्रभारियों को कहा कि पुलिस की प्रत्येक कार्यवाही निष्पक्षता से हो ताकि आमजनता का पुलिस से संबंध मधुर हो और नागरिकगण पुलिस की प्रत्येक कार्यवाही में सहयोग करें। आगामी दिनों में धान की कटाई को लेकर वाद-विवाद की स्थिति उत्पन्न होने की संभावना को देखते हुए इसका विशेष ध्यान

देने, जन सामान्य की शिकायतों को पूर्णतः गंभीरता से सुने एवं त्वरित कार्यवाही करने, विवाद की स्थिति पर प्रतिबंधक कार्यवाही एवं बाउण्ड ओव्हर की कार्यवाही सुनिश्चित करने, आपराधिक मामले में फरार चल रहे आरोपियों की हरसंभव पतासाजी कर जल्द पकड़ने के कड़े निर्देश दिए। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा विजिट के दौरान थाना-चौकी के विभिन्न रजिस्टर, डॉक्यूमेंट, तख्तियों, गोशवारा, जप्ती माल, शासकीय संपत्ति का रखरखाव, अधिकारी व जवानों का टर्न आउट, थाना और परिसर के साफ सफाई, अधिकारियों कर्मचारियों के कार्यालयीन कार्य दक्षता, क्षेत्र की समझ और विवेचना सम्बन्धी ज्ञान का अवलोकन किये। इस दौरान उन्होंने थाने के अधिकारियों, कर्मचारियों, जवानों को पुलिस की गरिमा के अनुरूप कार्य करने एवं समयबद्ध रूप से अनुशासित होकर अपने दायित्वों का निर्वहन करने व अपराध, शिकायत, मर्ग का शीघ्र निकाल करने एवं अपराधियों, गुंडा, बदमाश, उपद्रवियों और असमाजिक तत्वों पर अपराध पंजीबद्ध एवं प्रतिबंधात्मक कार्यवाही करने निर्देशित किये।

एसएसपी ने आम नागरिकों से क्षेत्र की पुलिसिंग का लिया फिडबेक

एसएसपी सूरजपुर श्री प्रशांत कुमार ठाकुर भ्रमण के दौरान आम नागरिकों से मुखातिब होते हुए उन्होंने थाना-चौकी के संबंध में आवश्यक जानकारी प्राप्त करने की कोशिश की। जिस पर विभिन्न ग्रामों के लोगों ने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि पुलिस की कार्यवाही अच्छी है और शहर-गांव में पुलिस की और पेट्रोलिंग बढ़ाने की आवश्यकता है जिस पर उन्होंने जल्द पेट्रोलिंग बढ़ाये जाने की बात कही।

एक ऐसा पुलिसकर्मी जो हर साल दिवाली पर कुदरगढ़ माता के दरबार में जलता है दिया

-संवाददाता-
सूरजपुर,03 नवम्बर 2024
(घटती-घटना)।

पुलिसकर्मियों को लेकर लोग आसहज महसूस करते हैं क्योंकि उनकी कार्यप्रणाली ही कुछ ऐसी रहती है पर ऐसे पुलिसकर्मियों के बीच कुछ ऐसे पुलिसकर्मी ऐसे भी होते हैं जो लोगों के लिए बहुत सहज होते हैं और लोगों के प्रति वह अच्छा भाव रखते हैं ऐसे ही पुलिसकर्मी सूरजपुर जिले में पदस्थ है जो पिछले 5 साल से कुदरगढ़ स्थित देवी के दरबार पर 2100 दिए दीपावली पर जलते हैं, कुदरगढ़ स्थित मां बागेश्वरी की धाम में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी पुलिस के आरक्षक राजेश पटेल ने दीपावली पर 21 सो दिया जलाया जिससे पूरा दरबार जगमगाता रहा, इस तरह हर वर्ष कुछ न कुछ नया करते रहते है। पटेल इस दौरान नीचे देवी मंदिर

की सीढ़ी से लेकर ऊपर स्थित माता की मंदिर तक करीब 2100 जलाते है जिसकी रौशनी लोगो के लिए आकर्षण का केंद्र होती है श्री पटेल बंदरों को दाना देने को लेकर भी सुर्खियों में रहते है।

न्यूजीलैंड ने भारत को उसी की सरजमीं पर किया क्लीन स्विप

» न्यूजीलैंड ने 25 रन से जीता मुंबई टेस्ट;

» एजाज पटेल ने मैच में 11 विकेट झटके

मुंबई,03 नवम्बर 2024।न्यूजीलैंड ने तीसरे टेस्ट में भारत को 25 रन से हरा दिया है। टीम इसी के साथ तीन मैचों की सीरीज 3-0 से जीत ली है। कीवी टीम पहली बार भारत में टेस्ट सीरीज जीती है। भारतीय टीम 24 साल बाद घर में क्लीन स्वीप हुई है। इससे पहले टीम इंडिया साल 2000 में 2 मैचों की टेस्ट सीरीज में साउथ अफ्रीका के हाथों क्लीन स्वीप हुई थी। तीन या उससे ज्यादा टेस्ट मैचों की होम सीरीज में टीम इंडिया पहली बार क्लीन स्वीप हुई है।

बेंगलुरु टेस्ट मैच में भारत को आठ विकेट से और पुणे टेस्ट मैच में 113 रनों से हार का सामना करना पड़ा था। भारत को 12 साल बाद सरजमीं पर टेस्ट सीरीज में हार का सामना करना पड़ा है।

मुंबई में वानखेड़े स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए न्यूजीलैंड ने अपनी पहली पारी में 235 रन बनाए थे। जवाब में भारतीय टीम पहली पारी में 263 रन पर ऑलआउट हो गई। भारत को 28 रन की

बढ़त मिली थी। इसके जवाब में न्यूजीलैंड की दूसरी पारी 174 रन पर खत्म हुई। भारत के सामने 147 रन का टारगेट था। जवाब में टीम 121 रन पर ऑलआउट हो गई। भारत की ओर से दूसरी पारी में ऋषभ पंत ने सबसे ज्यादा 64 रन बनाए, जबकि न्यूजीलैंड की ओर से एजाज पटेल ने 6 विकेट लिए। एजाज ने मैच में 11 विकेट लिए। उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया।

डब्ल्यूटीसी पॉइंट्स टेबल में दूसरे नंबर पर फिसला भारत

इस हार के बाद भारतीय टीम को वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप) के पॉइंट्स टेबल में नुकसान हुआ है। अब भारतीय टीम दूसरे स्थान पर फिसल गई है। इस मैच से पहले भारत का पॉइंट्स 62.82 था, जो अब 58.33 हो गया है।

भारत : रोहित शर्मा (कप्तान), यशस्वी जायसवाल, शुभमन गिल, विराट कोहली, ऋषभ पंत, सरफराज खान, वॉशिंगटन सुंदर, रविचंद्रन अश्विन, रवींद्र जडेजा, मोहम्मद सिराज और आकाश दीप।

न्यूजीलैंड : टॉम लैथम (कप्तान), डेवोन कॉन्वे, विल यंग, रचिन रवींद्र, डेरिल मिचेल, टॉम ब्लंडेल (विकेटकीपर), ग्लेन फिलिप्स, ईश सोढी, मैट हेनरी, एजाज पटेल, विलियम ओरूर्क।

खेल की संक्षिप्त खबरें

जुवेंटस जीत की राह पर वापस लौटा

लंदन,03 नवम्बर 2024। जुवेंटस ने जीत की राह पर वापसी की, लेकिन उसे पोस्ट से बहुत मदद की जरूरत थी।बियानकोनेरी ने उडीनेस में 2-0 से जीत हासिल की, जिसमें होम गोलकीपर मदुका ओकोये के खुद के गोल और निकोलो सवोना के स्ट्राइक के बाद गेंद दोनों गोल से ठीक पहले दाएं पोस्ट से टकरा गई।यह सभी प्रतियोगिताओं में छह मैचों में जुवे की दूसरी जीत थी और सप्ताहांत के बाकी मुकाबलों से पहले इसे तीसरे स्थान पर पहुंचा दिया। यह सीरी ए लीडर नेपोली से चार अंक पीछे था, जो रविवार को चौथे स्थान पर रहने वाली अटलांटा की मेजबानी करता है।

पीबीकेएस द्वारा रिटेन किए जाने से शशांक सिंह खुश

मुंबई,03 नवम्बर 2024। विस्फोटक बल्लेबाज शशांक सिंह 2025 इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के लिए उन्हें रिटेन करके पंजाब किंग्स द्वारा उन पर दिखाए गए विश्वास को चुकाने के लिए उत्सुक हैं। आईपीएल 2024 में शानदार प्रदर्शन के बाद, पंजाब किंग्स ने आगामी मेगा नीलामी से पहले शशांक को रिटेन करने का फैसला किया। वह विकेटकीपर-बल्लेबाज प्रभसिमरन सिंह के साथ फ्रैंचाइज़ी के साथ बने रहने वाले केवल दो खिलाड़ियों में से एक हैं।

इंग्लैंड के कप्तान ने अपने दम पर दिलाई जीत

» वेस्टइंडीज के खिलाफ ठोका दनदनाता शतक

सार्बिया,03 नवम्बर 2024। वेस्टइंडीज का दौरा कर रही इंग्लैंड की टीम ने मेजबान टीम के खिलाफ एक शानदार जीत दर्ज की है। इंग्लैंड और वेस्टइंडीज के बीच इस वक्त तीन मैचों की वनडे सीरीज खेली जा रही है। इस सीरीज के पहले मुकाबले में इंग्लैंड की टीम को 8 विकेट से हार का सामना करना पड़ा था, लेकिन उन्होंने सीरीज के दूसरे मुकाबले में दमदार वापसी की है और इंग्लैंड ने इस मुकाबले को 5 विकेट से जीता है। इस मुकाबले में टीम के कप्तान लियाम लिविंगस्टन ने शानदार शतक जड़ा। उनके इस शतक के कारण उनकी टीम ने 15 गेंद रहते इस मुकाबले को जीत लिया।

कैसा रहा मैच का हाल

दोनों टीमों के बीच खेले गए इस मुकाबले में इंग्लैंड के कप्तान ने

टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला लिया। इस मैच में पहले बल्लेबाजी करने के लिए मैदान पर उतरी वेस्टइंडीज की टीम ने 50 ओवर में 6 विकेट खोकर 328 रन बनाए। इसके जवाब में इंग्लैंड की टीम ने 47.3 ओवर में 5 विकेट खोकर 329 रन बनाए और इस मुकाबले को 5 विकेट से जीत लिया। इस मुकाबले में मिली जीत के साथ ही उनकी टीम ने तीन मैचों की टेस्ट सीरीज को 1-1 से बराबर कर दिया है। सीरीज का अगला मुकाबला 06 नवंबर को खेला जाएगा। इस मुकाबले को जीतने वाली टीम सीरीज अपने नाम करेगी।

लिविंगस्टन की शानदार पारी

इस मुकाबले में दोनों ही टीमों के कप्तानों ने शानदार पारी खेली। पहले वेस्टइंडीज के कप्तान शाई होप ने 127 गेंदों पर 117 रन बनाए। इसके बाद मैच की दूसरी पारी में लियाम लिविंगस्टन का जलवा देखने को मिला। लिविंगस्टन ने इस मुकाबले में 85 गेंदों पर 124 रनों की पारी खेली और शाई होप की पारी को फीका कर दिया। लिविंगस्टन ने इस मैच में अपना अर्धशतक 60 गेंदों पर पूरा किया था, लेकिन उन्होंने अपना शतक सिर्फ 77 गेंदों पर ही पूरा कर लिया। यानी कि उन्होंने अगले 50 रन सिर्फ 17 गेंदों पर बनाए। लियाम लिविंगस्टोन को शुरू में सितंबर में ऑस्ट्रेलिया का सामना करने के लिए इंग्लैंड की वनडे टीम से बाहर रखा गया था। दो महीने बाद, उन्होंने इंग्लैंड के कार्यवाहक कप्तान के रूप में मैच जिताऊ शतक जमाकर वेस्टइंडीज के खिलाफ सीरीज को निर्णायक स्थिति तक पहुंचाया है।

ट्रॉफी जीतना एक सपना है और उम्मीद है कि यह सच होगा

नई दिल्ली,03 नवम्बर 2024। शशांक सिंह के साथ पंजाब किंग्स के दो रिटेन खिलाड़ियों में से एक होने के बाद, विकेटकीपर-बल्लेबाज प्रभसिमरन सिंह ने कहा कि उनका ध्यान आईपीएल 2025 का खिताब जीतने के सपने को पूरा करने पर रहेगा। फ्रैंचाइज़ी द्वारा जारी एक बयान में प्रभसिमरन ने कहा, एक खिलाड़ी के रूप में, मेरा एकमात्र लक्ष्य टीम के लिए मैच जीतना है। आईपीएल ट्रॉफी जीतना एक सपना है और उम्मीद है कि यह सपना इस साल हकीकत में बदल जाएगा। 2019 से फ्रैंचाइज़ी के साथ जुड़े प्रभसिमरन ने 34 मैचों में 146.22 की स्ट्राइक रेट से 756 रन बनाए हैं और आईपीएल 2023 के दौरान टीम में खुद को नियमित खिलाड़ी के रूप में स्थापित किया है। आईपीएल 2024 में प्रभसिमरन, जो हाल ही में ओमान में इमर्जिंग मेन्स टी20 एशिया कप में इंडिया ए टीम का हिस्सा थे, 334 रन के साथ शशांक के 354 रनों के बाद दूसरे सबसे ज़्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी थे।

हम्बर्ट ने अल्काराज को हराकर पेरिस मास्टर्स क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई

हम्बर्ट,03 नवम्बर 2024। उगो हम्बर्ट ने कार्लोस अल्काराज़ को तीसरे दौर में हराकर चौंका दिया। घरेलू पसंदीदा खिलाड़ी ने अपने घरेलू एटीपी मास्टर्स 1000 में क्वार्टर फाइनल में जगह बनाने के लिए एक बेहद मनोरंजक मुकाबले में 6-1, 3-6, 7-5 से जीत हासिल की। हम्बर्ट की दो घंटे, 17 मिनट की जीत पीआईएफ एटीपी रैंकिंग के अनुसार उनके करियर की सबसे बड़ी जीत थी, जिसने 2022 एटीपी कप में तत्कालीन नंबर 2 डेनियल मेदवेदेव के खिलाफ उनकी जीत की बराबरी की। हम्बर्ट ने कहा,मुझे खुद पर बहुत गर्व है कि मैंने यह कर दिखाया। यह एक पागलपन भरा मैच था, एक पागलपन भरा माहौल था। शायद यह बर्सी में मेरा आखिरी मैच था (टूर्नामेंट के अगले साल से नए स्थान पर जाने से पहले), इसलिए मैंने आज रात अपना सर्वश्रेष्ठ देने की कोशिश की। यह वास्तव में एक बड़ा मैच था। हम्बर्ट ने कोर्ट सेंट्रल पर धमाकेदार शुरुआत में मैच के पहले पांच गेम जीते, इससे पहले कि उनके संकल्प की परीक्षा हो, क्योंकि अल्काराज़ ने मौके का फायदा उठाया। एटीपी टूर की रिपोर्ट के अनुसार, फिर भी स्पेनिश खिलाड़ी एक तनावपूर्ण निर्णायक सेट के अंत में हम्बर्ट को रोकने में सफल नहीं हो सका, जब घरेलू पसंदीदा खिलाड़ी ने समय पर शॉटमेकिंग के अपने कौशल को पुनः प्राप्त कर लिया और अपनी जीत सुनिश्चित कर ली।

पुरुष हॉकी राष्ट्रीय चैंपियनशिप आज से चेन्नई में शुरू होगी

नई दिल्ली,03 नवम्बर 2024। सीनियर पुरुष हॉकी राष्ट्रीय चैंपियनशिप का 14वां संस्करण सोमवार को तमिलनाडु के चेन्नई में मेयर राधाकृष्णन हॉकी स्टेडियम में शुरू होने वाला है। आठ पूल में विभाजित कुल 31 टीमें इस टूर्नामेंट में भाग लेंगी, जो 16 नवंबर तक चलेगा। लीग चरण के दौरान, प्रत्येक टीम अपने पूल में प्रत्येक अन्य टीम के साथ खेलेगी। प्रत्येक पूल से शीर्ष टीम 13 नवंबर को क्वार्टर फाइनल में पहुंचेगी, उसके बाद 15 नवंबर को सेमीफाइनल और 16 नवंबर को फाइनल और तीसरे/चौथे स्थान के लिए प्ले-ऑफ होगा। पूल ए में मौजूदा चैंपियन हॉकी पंजाब के साथ दादरा और नगर हवेली और दमन और दीव हॉकी और छत्तीसगढ़ हॉकी शामिल हैं। पूल बी में हॉकी हरियाणा, तेलंगाना हॉकी, हॉकी हिमाचल और हॉकी मिजोरम शामिल हैं।

पूल सी में हॉकी यूनिट ऑफ तमिलनाडु, हॉकी मध्य प्रदेश, हॉकी आंध्र प्रदेश और हॉकी अंडमान और निकोबार शामिल हैं। पूल डी में हॉकी कर्नाटक, हॉकी चंडीगढ़, हॉकी उत्तराखंड और त्रिपुरा हॉकी शामिल हैं। पूल ई में, हॉकी एसोसिएशन ऑफ ओडिशा का मुकाबला ले पुडुचेरी हॉकी, हॉकी राजस्थान और हॉकी अरुणाचल से होगा। पूल एफ में उत्तर प्रदेश हॉकी, दिल्ली हॉकी, केरल हॉकी और हॉकी जम्मू और कश्मीर शामिल हैं। पूल जी में हॉकी झारखंड, हॉकी महाराष्ट्र, गोवा हॉकी और हॉकी गुजरात शामिल हैं। पूल एच में मणिपुर हॉकी, हॉकी बंगाल, हॉकी बिहार और असम हॉकी शामिल हैं।

टूर्नामेंट की शुरुआत कई मैचों से होगी, जिसमें उत्तर प्रदेश हॉकी बनाम केरल हॉकी और हॉकी कर्नाटक बनाम हॉकी उत्तराखंड के अलावा अन्य रोमांचक मुकाबले शामिल हैं, जो एक रोमांचक चैंपियनशिप के लिए मंच तैयार करते हैं। हॉकी इंडिया के अध्यक्ष दिलीप तिर्की ने आगामी टूर्नामेंट के लिए अपना उत्साह व्यक्त करते हुए कहा, हम चेन्नई में 14वीं हॉकी इंडिया सीनियर पुरुष राष्ट्रीय चैंपियनशिप की मेजबानी करके खुश हैं, जो हॉकी की समृद्ध विरासत वाला शहर है। यह चैंपियनशिप देश भर से सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं को प्रदर्शित करने के लिए एक मंच प्रदान करती है और भारतीय हॉकी के भविष्य के सितारों को विकसित करने में एक महत्वपूर्ण आयोजन है। मैं सभी टीमों को शीर्ष सम्मान के लिए प्रतिस्पर्धा करने के लिए शुभकामनाएं देता हूं। इसी भावना को दोहराते हुए हॉकी इंडिया के महासचिव भोला नाथ सिंह ने कहा, ÷यह चैंपियनशिप उच्च गुणवत्ता वाली हॉकी और कड़ी प्रतिस्पर्धा का वादा करती है। हमने भागीदारी में जबरदस्त वृद्धि देखी है, और देश के सभी कोनों से उत्साह देखना उत्साहजनक है। मैं कुछ रोमांचक मैचों की प्रतीक्षा कर रहा हूँ, जिसमें टीमें प्रतिष्ठित खिताब के लिए प्रतिस्पर्धा करेंगी।÷

2 शादियां,2 बेटियां,3 अफेयर्स की हुई चर्चा,आज रह गया सिंगल

साउथ इंडियन स्टार्स का नाम लें तो शायद नई पीढ़ी के सितारों का नाम बाद में याद आएगा। सबसे पहले याद आएंगे दो नाम एक रजनीकांत और दूसरा कमल हासन। जो उम्र के उस पड़ाव पर पहुंच चुके हैं जहां बहुत से एक्टर्स काम करना बंद कर देते हैं या फिर साइड रोल चुनने लगते हैं। ऐसे दौर में ये दोनों स्टार आज भी फिल्मी पर्दे पर गजब ढा रहे हैं। इन्हीं दो सितारों में से एक है. कमल हासन। कमल हासन वो एक्टर हैं जो साउथ और बॉलीवुड फिल्में दोनों जगह ही बराबरी से एक्टिव रहे। फिल्मी दुनिया में कमल हासन जितने हुनरमंद स्टार हैं अपनी लव लाइफ को लेकर भी वो उतने ही सुर्खियों में रहे हैं।

दो शादियां,दोनों में हुआ तलाक

कमल हासन ने पहली शादी की वाणी गनपति से जिस वक्त कमल हासन ने ये शादी की उस वक्त उनकी उम्र थी केवल 24 साल। दोनों का रिश्ता कुछ समय तक बहुत अच्छा चला. लेकिन तलाक तक बात बहुत जल्दी बहुत जल्दी पहुंच गई। इस क्लासिकल डांस से कमल हासन ने 1978 में शादी की और 1988 में तलाक ले लिया। इसके बाद उन्होंने सारिका से शादी रचाई. सारिका के साथ वो लिवइन में रहते थे. जब सारिका प्रेग्नेंट हुईं तब दोनों ने शादी का फैसला किया. इस शादी से श्रुति और अक्षरा उनकी दो बेटियां भी हैं. लेकिन 2004 में सारिका और कमल हासन का भी तलाक हो गया।

तीन अफेयर्स भी रहे

खबरों की मानें तो अपनी पहली शादी से पहले कमल हसन श्री विद्या नाम की एक्ट्रेस के साथ रिलेशनशिप में थे। इसके बाद वो वाणी गनपति के संग रहे और फिर सारिका के संग। सारिका के साथ मैरिड लाइफ में रहते हुए कमल हासन को उन्हीं की सहेली गौतमी से प्यार हो गया। गौतमी सं नजदीकियां ही सारिका और कमल हासन के तलाक की वजह मानी जाती है। दोनों करीब तेरह साल तक रिलेशन में रहे. इसके बाद कमल हासन का नाम 22 साल छोटी सिमरन बग्गा के साथ जुड़ा। हालांकि सिमरन बग्गा ने अपने ही दोस्त से शादी कर इन खबरों को नकार दिया।

क्या दुलकर सलमान और साई पल्लवी एक साथ काम करेंगे ?

क्या दुलकर सलमान और साई पल्लवी एक साथ काम करेंगे? इसका मतलब है कि फिल्मनगरी में इसका जवाब हां है। दुलकर सलमान पवन साधिनेनी द्वारा निर्देशित फिल्म आकासमलो ओका तारा के हीरो हैं। इस फिल्म की आधिकारिक घोषणा इस साल जुलाई में दुलकर के जन्मदिन (28 जुलाई) के अवसर पर की गई थी। लेकिन दुलकर के अन्य प्रोजेक्ट्स में व्यस्त होने के कारण फिल्म अभी तक सेट पर नहीं आ पाई है। वे इसे इस साल के अंत में सेट पर ले जाना चाहते हैं। बताया जा रहा है कि फिल्म यूनिट इस फिल्म में साई पल्लवी को हीरोइन बनाने के बारे में सोच रही है और जब साई पल्लवी ने यह कहानी सुनी तो वह भी फिल्म करने के लिए राजी हो गईं। और... क्या दुलकर-साई पल्लवी की जोड़ी बनेगी? इसका मतलब है कि इंतजार करें और देखें। इस फिल्म का निर्माण स्वप्ना सिनेमाज, वैजयंती मूवीज, लाइटबॉक्स एंटरटेनमेंट और गीता आर्ट्स के बैनर तले संदीप गुन्नम और राम्या गुन्नम करेंगे।

1 साल में टूटी शादी, जैकी श्रॉफ की पत्नी संग जुड़ा नाम, लगातार फ्लॉप हुईं 6 फिल्में फिर अचानक हो गए इंडस्ट्री से गायब

बॉलीवुड में कई एक्टर्स रहे जिन्होंने कुछ ही समय में बेशुमार सफलता हासिल की, लेकिन फिर उनके स्टारडम का सितारा ऐसा डूबा कि वो अचानक गायब ही हो गए। साहिल खान एक ऐसे ही एक्टर थे जिन्होंने अपनी एक्टिंग के साथ ही अपनी फिटनेस से भी दर्शकों पर कमाल का असर छोड़ा था। ऑडियंस के बीच उनका क्रेज कुछ ऐसा था कि उनकी तुलना उन दिनों सलमान खान से होती थी। साहिल खान का एक्टिंग स्टाइल और बॉडी सलमान खान से काफी मिलता-जुलता था।

साहिल खान ने काफी कम समय में खूब लोकप्रियता हासिल की थी। उनकी फिल्मों को दर्शक काफी पसंद करते थे। 'स्टाइल', 'एक्सक्यूज मी' जैसी फिल्मों में नजर आए साहिल खान को म्यूजिक वीडियो से रातों-रात पहचान मिली थी। उनका म्यूजिक वीडियो इतना जबरदस्त हिट रहा था कि चारों तरफ उनकी ही चर्चा होने लगी थी।

टाइगर श्रॉफ की मां के साथ जुड़ा था नाम

अपने अभिनय से ज्यादा साहिल खान ने अपनी निजी जिंदगी से सुर्खियां बटोरी हैं। उनका नाम कई बार विवादों में रह चुका है। एक्टर का नाम जैकी श्रॉफ की पत्नी आयशा श्रॉफ के साथ जुड़ा था। टाइगर श्रॉफ की मां आयशा ने एक्टर उन पर उनके पैसे न लौटाने के आरोप लगाए थे जिसके बाद से उनके लिंकअप की खबरें सामने आने लगी थीं। हालांकि दोनों ने अपने रिश्ते पर कभी कोई टिप्पणी नहीं की थी।

साहिल खान की निजी जिंदगी के बारे में बात करें तो एक्टर ने साल 2004 में मॉडल नीगार खान से शादी की थी, लेकिन उनकी ये शादी एक साल भी नहीं टिक पाई थी। एक साल के अंदर ही कपल का तलाक हो गया था। शादी के कुछ समय बाद ही कपल के बीच अनबन शुरू हो गई थी और मामला तलाक पर जाकर खत्म हुआ।

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

छत्तीसगढ़ राज्योत्सव 2024

दिनांक 04 से 06 नवम्बर

श्री विष्णु देव साय
मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

छत्तीसगढ़ राज्य स्थापना दिवस "राज्योत्सव"

उद्घाटन कार्यक्रम

04 नवम्बर, 2024
राज्योत्सव मैदान, नवा रायपुर अटल नगर

मुख्य अतिथि
डॉ. मोहन यादव
माननीय मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

अध्यक्ष
श्री विष्णु देव साय
माननीय मुख्यमंत्री, छत्तीसगढ़

अतिविशिष्ट अतिथि
डॉ. रमन सिंह
माननीय अध्यक्ष, विधानसभा छत्तीसगढ़

विशिष्ट अतिथि

श्री अरूण साव
माननीय उप मुख्यमंत्री
छत्तीसगढ़

श्री विजय शर्मा
माननीय उप मुख्यमंत्री
छत्तीसगढ़

श्री रामविचार नेताम, माननीय मंत्री
श्री दयाल दास बघेल, माननीय मंत्री
श्री केदार कश्यप, माननीय मंत्री
श्री लखन लाल देवांगन, माननीय मंत्री
श्री श्याम बिहारी जायसवाल, माननीय मंत्री
श्री ओ.पी. चौधरी, माननीय मंत्री
श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े, माननीय मंत्री
श्री टंकराम वर्मा, माननीय मंत्री
डॉ. चरणदास महंत, माननीय नेता प्रतिपक्ष
श्री बृजमोहन अग्रवाल, माननीय सांसद
श्री राजेश मूणत, माननीय विधायक
श्री पुरन्दर मिश्रा, माननीय विधायक
श्री मोती लाल साहू, माननीय विधायक
श्री अनुज शर्मा, माननीय विधायक
श्री गुरू खुशवंत साहेब, माननीय विधायक
श्री इंद्र कुमार साहू, माननीय विधायक

एवं

समस्त माननीय सांसद, विधायक, निगम, मंडल, आयोग, जिला पंचायत के माननीय अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं सदस्यगण, माननीय महापौर की गरिमामयी उपस्थिति में आयोजित है।

आप सादर आमंत्रित हैं...

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय से जुड़ने के लिए QR CODE स्कैन करें।

हमने बनाया है, हम ही सँवारेंगे

Visit us : ChhattisgarhCMO | ChhattisgarhCMO | ChhattisgarhCMO | ChhattisgarhCMO | DPRChhattisgarh | DPRChhattisgarh | www.dprcg.gov.in | छत्तीसगढ़ जनसंपर्क

संवाद 42009/49

प्रकाशक,मुद्रक,स्वामी अविनाश कुमार सिंह के द्वारा सांई ऑफसेट प्रिंटर्स,नमनाकला,संत हरकेवल विद्यापीठ के पास,अम्बिकापुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-अविनाश कुमार सिंह*(पी.आर.बी.कानून के अनुसार संपूर्ण संपादकीय दायित्व के लिए जिम्मेदार)
RNI Reg.No.CHHHIN/2004/15050मो. 94062-23001,98265-32611,Email:ghatatighatana11@ gmail.com,Website:www.ghatatighatana.com, (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र अम्बिकापुर न्यायालय मान्य होगा)